ओ३म्
# आर्य जगत्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 06 मई 2018 | आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र | सप्ताह रविवार, 06 मई 2018 से 12 मई 2018

जयेष्ठ कृ. – 06 ● वि० सं०–2075 ● वर्ष 60, अंक 18, प्रत्येक मगंलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 195 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,119 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

## महात्मा हंसराज दिवस पंचकूला में 'समर्पण दिवस' के रूप में मनाया गया

महात्मा हंसराज जयन्ती पर्व इस वर्ष पंचकूला में पैरेड ग्राउण्ड में 12000 से ऊपर की संख्या में देश के कोने–कोने से आए आर्यों की उपस्थिति में भव्य 'समर्पण दिवस' के रूप

में सम्पन्न हो गया। समारोह के अध्यक्ष एवं आयोजन के प्रेरणा स्रोत डॉ० पूनम सूरी, प्रधान, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति ने अपने मुख्य सम्बोधन में कहा, ''महात्मा हंसराज पावन–जयंती को 'समर्पण दिवस' के रूप में आयोजित करने का उद्देश्य उन मूल्यों के प्रति स्वयं को पुनः समर्पित करना है जो उस त्यागी महापुरुष ने डी.ए.वी. आंदोलन के स्थापना काल में अपनाए।'' उन्होंने आगे कहा कि "यह उनके तप–त्याग और मार्गदर्शन का परिणाम है कि आज डी.ए.वी. के सद्कार्यों की गूंज देश के कोने–कोने में सुनाई देती है। हमारे स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय तथा अन्य गतिविधियों की चर्चा राष्ट्रीय ही नहीं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर होती है। हम देश के उन हिस्सों में भी शैक्षणिक गतिविधियों को संचालित करते हैं, जहाँ सरकार सहित कोई भी संगठन शिक्षा के क्षेत्र में मौजूद नहीं है। साफ–सफाई, जल–संरक्षण, वृक्षारोपण, पर्यावरण सुरक्षा तथा रक्तदान जैसे सामाजिक सरोकारों के प्रति हम सदैव सचेत रहते हैं। देश में जब भी कोई प्राकृतिक आपदा अथवा राष्ट्रीय संकट आता है, आर्य समाज और डी.ए.वी. आंदोलन आगे बढ़ कर राहत और पुनर्वास कार्यों में जुट जाते हैं।" उन्होंने कहा कि "हमारे पूर्व अध्येता विद्यार्थी राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय स्तर पर योगदान देकर संसार को और बेहतर बना रहे हैं। राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय खेलों में पदक प्राप्त कर डी.ए.वी. को गौरवान्वित कर रहे हैं।"

आज इस मंच पर मुझे गौरव का अनुभव हो रहा है कि महात्मा हंसराज जी ने जो सपने देखे थे उन्हें हम रोज एक कदम आगे बढ़कर पूरा कर रहे हैं। मुझे संतोष है कि डी.ए.वी. द्वारा जलाई गई शिक्षा की मशाल दलित, आदिवासी और वंचित जनों के जीवन को प्रकाशित कर रही है।

कार्यक्रम से पहले यज्ञ किया गया जिसमें डॉ. पूनम सूरी तथा श्रीमती मणी सूरी जी मुख्य यजमान रहे। देशभर से आए आर्यों, आर्य सन्यासियों तथा विद्वानों ने आध्यात्मिक उपस्थिति देकर मुख्य यजमान दम्पति सहित सभी यजमानों पर पुष्प वृष्टि कर अपना आशीर्वाद दिया। मंचीय कार्यक्रम का शुभारंभ वैदिक ऋचाओं के गायन सहित दीप प्रज्ज्वलन से हुआ।

मुख्य अतिथि डॉ. पूनम सूरी ने सबसे पहले 9 आर्य संन्यासियों तथा 8 वैदिक विद्वानों को सम्मानित किया गया। सामाजिक विकास एवं शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए हरियाणा के पुलिस महानिदेशक श्री बी.एस. संधु एवं पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला के कुलपति डॉ. बी.एस. घुम्मन वशिष्ट सम्मान से सम्मानित किए गए। एम.आर.ए. डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, सोलन की प्रिंसिपल श्रीमती अनुपमा शर्मा, डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, लुधियाना की प्रिंसिपल श्रीमती जसविंदर कौर सिंधु

शेष पृष्ठ 12 पर

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. ९

संपादक – पूनम सूरी

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 06 मई 2018 से 12 मई 2018

## आओ, देवों के मार्ग पर चलें

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

**आ देवानामपि पन्थामगन्म, यच्छक्नवाम तदनुप्रवोढुम्।**
**अग्निर्विद्वान्त्स यजात् स इद्धोता, सोऽध्वरान्त्स ऋतून् कल्पयाति।।**

अथर्व 16.56.3

ऋषिः **ब्रह्मा।** देवता **अग्निः।** छन्दः **त्रिष्टुप्।**

● **(अपि)** क्या **(देवानां)** देवों के **(पन्थां)** मार्ग पर **(आ– अगन्म)** [हम] चलें? [हाँ], **(यत्)** यदि **(तत् अनुप्रवोढुम्)** उस पर स्वयं को चलने में **(शक्नवाम)** समर्थ हों। **(अग्निः)** आत्मा **(विद्वान)** विद्वान् है, **(सः)** वह **(यजात्)** यज्ञ करे, **(सः)** वह **(इत्)** सचमुच **(होता)** होम–निष्पादक है। **(सः)** वही **(अध्वरान्)** यज्ञों को और **(सः)** वही **(ऋतून्)** ऋतुओं को **(कल्पयाति)** रचाये।

● आओ, हम देवों के मार्ग पर चलें। यज्ञ के तंतु से बंधे रहना ही देवों का मार्ग है। देखो,ये सूर्य, चन्द्र, अग्नि, पृथिवी, ऋतु, संवत्सर आदि देव कैसे 'यज्ञ' के मार्ग पर चल रहे हैं।कभी उनके यज्ञ–पालन में व्यतिक्रम नहीं होता। शरीर में भी मन, बुद्धि, प्राण, इन्द्रियाँ आदि देव कैसे संगठित हाक देवयान का अवलम्बन कर शरीर–यज्ञ को चला रहे हैं। समाज में भी 'देव' पदवी को पाये हुए महापुरुष 'यज्ञ' के ही पथ पर चल रहे हैं। और, सबसे बड़ा देवों का देव परमात्मा भी निरन्तर देव–मार्ग पर चलता हुआ इस ब्रह्मांड–यज्ञ का सम्पादन कर रहा है। हम चाहते हैं कि हम भी इस देव–मार्ग के पथिक बनें। क्या तुम कहते हो कि इस मार्ग पर चलना अति कठिन है, तलवार की धार पर चलने के समान है, अतः पहले अपनी शक्ति को तोल लो कि तुम इस पर स्थिर रह भी सकोगे या नहीं, उसके पश्चात् इस मार्ग पर पग बढ़ाना? सुनो, हमने अपने सामर्थ्य को भलीभांति परख लिया है। हमारा आत्मा 'अग्नि' है, अग्रणी है, तेज का पुंज है, ज्योतियों की ज्योति है। वह 'विद्वान' है, देवों की राह पर चलना और चलाना जानता है। अतः हमें देव–प्रदर्शित यज्ञ–मार्ग भटक जाने का कोई भय नहीं है। हम निश्चिंत होकर उसके हाथों में अपनी 'यज्ञ' की पतवार सौंप रहे हैं। वह 'होता' है, यज्ञ– निष्पादन में कुशल है,संस्कृत हवि का होम करने में निष्णात है। वह जानता है कि यज्ञ को 'अध्वर' अर्थात् हिंसा–रहित ही होना चाहिए। भद्रजनों को हानि पहुँचाने के उद्देश्य से किया गया यज्ञ यज्ञ नहीं है। हमारा आत्मा 'अध्वर' यज्ञों को रचाये और वही यह भी देख कि किस यज्ञ के लिए कौन–सी ऋतु, कौन–सा समय उपयुक्त है क्योंकि काल–अकाल का विचार किये बिना प्रारम्भ किया गया यज्ञ सफल नहीं होता। आओ, हम देव–पथ के पथिक बनें।

❑

**वेद मंजरी से**

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

## बोध कथाएँ

● महात्मा आनन्द स्वामी

स्वामी जी ने 'समृद्धि का मूल मंत्र–एकता और पुरुषार्थ' पर कथा सुनाते हुए कहा जो लोग मिलकर रहते हैं, उन्हें निश्चित रूप से सम्पत्ति मिलती है; सुख मिलता है। जो मिलकर नहीं रहते, उन्हें असफलता के अतिरिक्त कुछ नहीं मिलता। 'बाँटकर खाओ'! पर कहा–जो लोग न स्वयं खाते हैं, न दूसरों को खिला सकते है। यही नहीं करते कि स्वयं न खा सके तो दूसरों को ही खिला दें। दुनिया में भूख न रहने दें। ग़रीबी न रहने दें। इनके गलत दृष्टिकोण से कम्युनिज़्म पैदा होता है। 'धीरे–धीरे रे मना'! पर कहा धैर्य से काम लो! परिश्रम करते जाओ, सफलता मिलेगी अवश्य।

**–आगे पढ़ेंगे तीन लघु कथाएँ**

### जल्पी मत बनो!

एक थे पति और पत्नी। नया विवाह हुआ। अलग रहने के लिए एक मकान उन्होंने किराए पर लिया। एक सेठ साहब का मकान था वह। नीचे के भाग में सेठजी स्वयं रहते थे, ऊपर के भाग में यह पति और पत्नी। अपने मकान को उन्होंने कुर्सियों और कौचों से सजाया; मेजों और बत्तियों से सजाया; परदों और कालीनों से सजाया। बहुत प्यार से रहते थे वे। एक दिन सेठ ने सुना कि वे दोनों झगड़ा कर रहे है। पत्नी भी ऊँचे–ऊँचे बोल रही थी, पति भी। युद्ध छिड़ गया प्रतीत होता था। सेठ जी पर्याप्त समय तक प्रतीक्षा करते रहे कि झगड़ा समाप्त हो जाए; वह समाप्त नहीं हुआ। आवाज के तोपखाने पूरे वेग से चल रहे थे।

सेठ साहब घबराकर ऊपर गए; बोले–''किस बात पर झगड़े जाते हो? तुम तो कभी झगड़ते नहीं थे? तुम्हारे–जैसे अच्छे लोग तो मैंने देखे नहीं। फिर आज क्या हुआ?''

पति ने कहा–''देखिऐ सेठजी! आप ही इसको कुछ बुद्धि दीजिऐ। मैं कहता हूँ, हम लड़के को वकील बनाएँगे। आनन्द से रुपया कमाऐगा। समय पर कचहरी जाऐगा। समय पर वापस आऐगा। यह मूर्खा कहती है कि इसे डॉक्टर बनाएँगे। अब बताइऐ, डाक्टर का जीवन भी कोई जीवन है? दिन को शांति न रात्रि को विश्राम। डॉक्टर बनाना तो उससे शत्रुता करना होगा।''

सेठजी ने श्रीमती से पूछा तो वह बोली–''मेरे तो भाग्य खोटे थे, जो इनके पल्ले पड़ी! इन्हें तो रुपयों के अतिरिक्त कुछ सूझता ही नहीं; और फिर डॉक्टर क्या रुपया नहीं कमाते? रुपया भी कमाते हैं, दुनिया की सेवा भी करते हैं। वकील का जीवन क्या है? हर समय झूठ, हर समय चिन्ता! मैं तो लड़के को डॉक्टर ही बनाऊँगी।''

सेठ साहब ने सोचते हुए कहा–''इसके लिए इतना झगड़ा करने की क्या आवश्यकता है? लड़के से पूछ तो लो! यदि वह डॉक्टर बनना चाहता है तो डॉक्टर बना दो, वकील बनना चाहता है तो कानून पढ़ा दो। आओ! मैं तुम्हारे लड़के को पत्र लिखता हूँ जो कुछ वह कहे, उसे तुम दोनों मान लेना।''

दोनों ने एक–साथ कहा–''परन्तु लड़का तो अभी पैदा ही नहीं हुआ!''

ऐसे लोगों को कहते हैं–जल्पी। सूत न कपास, घर में लट्ठम–लट्ठ। ऐसे व्यक्तियों में श्रद्धा नहीं होती। श्रद्धा न हो तो ज्ञान नहीं होता। ज्ञान न तो मन को एकाग्रता नहीं मिलती। मन एकाग्र न हो तो ईश्वर नहीं मिलता।

### आलस छोड़ो, श्रम करो!

दो अफीमची अफीम खाकर एक वृक्ष के नीचे लेटे थे। वृक्ष था बेरी का। शाखा से एक बेर एक अफीमची की छाती पर आ गिरा, परन्तु वह अफ़ीमची ही क्या हुआ जो हाथ–पाँव हिलाऐ! रातभर बेर उसकी छाती पर पड़ा रहा। रातभर वह प्रतीक्षा करता रहा कि दूसरा अफीमची उठे और बेर को उसके मुँह में डाल दे, परन्तु दूसरा भी तो अफीमची था। वह भी रातभर लेटा रहा, उठा ही नहीं।

प्रातः एक व्यक्ति उधर से निकला। उसने ध्यान से उन दोनों को देखा। पहले समझा, शायद मर गए हैं। हिलते–डुलते नहीं। शायद रात में किसी सर्प ने अथवा विषैले कीड़े ने काट लिया है और दोनों के प्राणपखेरु उड़ गए हैं। परन्तु पास गया तो देखा कि दोनों की आँखें खुली हैं। दोनों बटर–बटर देख रहे हैं। आश्चर्य से उसने पूछा–

''तुम्हें क्या हुआ है?''

वह बेरवाले के पास खड़ा था; बेरवाले ने धीमी आवाज में कहा–''यह बेर उठाकर मेरे मुँह में डाल दो''

उस व्यक्ति ने बेर उठाया। उसके मुँह में डाल दिया; बोला –

शेष पृष्ठ 06 पर ☞

पं. गुरुदत्त विद्यार्थी की जयंती पर विशेष

# उद्भट वैदिक विद्वान : पं. गुरुदत्त विद्यार्थी

● प्रो. ओम कुमार आर्य

महर्षि दयानन्द के समकालीन एवं किंचित् परवर्ती वैदिक विद्वानों में पं. गुरुदत्त विद्यार्थी का नाम प्रथम पंक्ति में आता है। उन्होंने अत्यन्त अल्पायु में ही अपने व्याखानों एवं लेखनी के द्वारा वेद प्रचार की जो धूम मचाई और आर्य समाज की जो महती सेवा की तथा शोधपूर्ण कृतियों की रचना की उसकी मिसाल अन्यत्र मिलना दुर्लभ है। आपका जन्म विभाजन से पहले के संयुक्त पंजाब के मुल्तान नगर में 26 अप्रैल 1864 को हुआ था। आप अपने माता–पिता की सबसे छोटी सन्तान थे। इनका वंश 'सरदाना' नाम से विख्यात था; जनश्रुति थी कि इनके किसी पूर्वज राजा जगदीश ने देश रक्षा हेतु अपना सिर दिया था, इसलिए वंश 'सरदाना' कहलाया। वैदिक धर्म और ऋषि–मिशन के लिए अपना सर्वस्व दाँव पर लगाकर और एक 'जीवित शहीद' का जीवन बिताकर पं. गुरुदत्त ने 'सरदाना' वंश के गौरव को चार चाँद लगा दिए।

वे बाल्यकाल से ही अत्यंत प्रखर बुद्धि के मेधावी बालक थे। इनमें गवेषणा एवं शोध की वैज्ञानिक प्रवृत्ति प्रारंभ से ही थी। यह भी विचित्र संयोग था कि इनके प्रेरणास्रोत महर्षि दयानन्द का बचपन का नाम 'मूलशंकर' था और इनका बचपन का नाम 'मूला' था। मूलशंकर अपने आराध्य शंकर (निराकार) के मूल तक पहुँचे तो 'मूला' ने भी अपने शोधकार्य एवं अकाट्य तर्कों से ज्ञान, विज्ञान के मूल वेद और आदिमूल परमेश्वर को वैज्ञानिक पद्धति से सिद्ध किया और वैज्ञानिक धरातल पर स्थापित किया। वे वास्तव में ही योग्य गुरु (ऋषि) के योग्य शिष्य थे।

ये अनेक भाषाएँ अधिकार पूर्वक बोल सकते थे, लिख सकते थे। यथा–हिन्दी, संस्कृत, अरबी, फारसी, उर्दू, अंग्रेज़ी आदि। आप मैट्रिक में प्रान्त भर में पाँचवें स्थान पर रहे थे। बीच की सभी परीक्षाएँ बड़े अच्छे अंकों से उत्तीर्ण करके आपने विज्ञान में एम.ए.किया। उल्लेखनीय है कि परतंत्रता के काल में आप प्रथम भारतीय थे जो किसी राजकीय महाविद्यालय में प्राध्यापक नियुक्त हुए थे। आर्य समाज को अपने इस होनहार सपूत पर गर्व है जिसके असाधारण पाण्डित्य की धाक और धूम देश–विदेश में समानरूप से थी और आयु पर्यन्त मात्र 26 वर्ष।

आप एक मेधावी वैज्ञानिक थे, विज्ञान के क्षेत्र में प्रचलित विविध वादों और सिद्धांतों का आपने गहन अध्ययन किया था। डार्विन के विकासवाद का आपके युवामन पर यह कुप्रभाव पड़ा कि आप घोर अनीश्वरवादी, अनास्थावादी नास्तिक बन गए। नास्तिकता का दौर आपके जीवन में 1879–80 में प्रारंभ हुआ और धुर सन् 1883 के अक्टूबर मास की 30 तारीख तक चला। अपने प्रिय ऋषि के अन्तिम दर्शन के साथ ही अनीश्वरवाद का यह दौर भी सदा के लिये समाप्त हो गया और सामने आया एक दृढ़ ईश्वरभक्त गुरुदत्त। वे डी.ए.वी. को वेद प्रचार का एक सशक्त माध्यम मानते थे, ऋषि मिशन का सच्चा सेवक मानते थे। इसलिए वे डी.ए.वी. की स्थापना हेतु प्राणपण से जुटे रहे, स्थापना के सपने को साकार किया, अपने प्रिय साथी युवक हंसराज बी.ए. को संस्था का मुखिया नियुक्त करावाया, किंतु बाद में कुछ मतभेदों के चलते वे अपने प्रिय डी.ए.वी. से पृथक् हो गए। मैं बहुत ही विनम्रतापूर्वक निवदेन कर रहा हूँ कि हमारे डी.ए.वी. के कर्णधारों को गंभीरतापूर्वक विचार करना चाहिए कि आज भी पलड़ा 'दयानन्द' और 'वैदिक' की ओर झुक रहा है या 'एंग्लो' की ओर।

सन् 1883 के पश्चात् तो गुरुदत्त के जीवन का काँटा ही बदल गया। बदलाव का कारण था ऋषि से भेंट होना। ऋषि के सान्निध्य ने गुरुदत्त को 'ईश्वर मार्ग का पथिक' मुंशीराम को 'कल्याण मार्ग का पथिक' हंसराज को 'क्रान्तिपथ का पथिक और लेखराम को 'बलिदान मार्ग का पथिक बना दिया। यह सब ऋषि के जादुई व्यक्तित्व का ही परिणाम और प्रभाव था। इतिहास जब भी अनन्य ऋषि भक्तों की कभी चर्चा करेगा, तो उस चर्चा का पहला नाम निश्चित रूपेण पं. गुरुदत्त एम.ए. ही होगा। धर्मवीर पण्डित लेखराम आर्य मुसाफिर ने कभी कहा था कि आर्य समाज के मंच से तकरीर (व्याख्यान) और तहरीर (लेखन) का कार्य बन्द नहीं होना चाहिए। पं. गुरुदत्त ने इन दोनों ही क्षेत्रों में अनुकरणीय कार्य किया और अपनी विद्वत्ता की अमिट छाप छोड़ी।

तकरीर इनका जुनून था तो तहरीर दीवानगी, एक धुन, एक सनक। इनके व्याख्यानों की मांग समाज के सत्संगों, उत्सवों में रहती थी और बुद्धिजीवी वर्ग आपके लेखों का प्रशंसक था। सन् 1889 में आपने 'वैदिक मैगजीन' नामक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ किया जो आंग्ल भाषा में निकलती थी। यह बहुत ही लोकप्रिय पत्रिका थी जिसके पाठकों की देश विदेश में बड़ी संख्या थी। लेखन कार्य को आप अत्यधिक समय देते थे। 48–48 घण्टे आप लेखन कार्य में जुटे रहते थे। वैदिक मैगजीन के लिए लिखना प्रो. मैक्समूलर, मोनियर विलियम्स, टी. विलियम्स, पादरी पिन्कॉट आदि से पत्र व्यवहार करना, उनके वेद विरोधी लेखों का मुँहतोड़ उत्तर देना, ईश, मुण्डक, माण्डूक्य उपनिषदों का भाष्य करना आदि ऐसे परिश्रम साध्य कार्य थे जिनके कारण आपके स्वास्थ्य पर अत्यन्त दुष्प्रभाव पड़ा। उनकी विद्वता, पाण्डित्य और विज्ञान विषयक उनकी गहन समझ का ही परिणाम था कि उन द्वारा रचित एक लघु किंतु गवेषणापूर्ण पुस्तिका Terminology of the Vedas (वैदिक संज्ञा विज्ञान) ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के बी.ए. संस्कृत के पाठ्यक्रम में शामिल की गई थी।

'आत्मा का अस्तित्व' विषय पर आपने एक बहुत ही सारगर्भित लेख लिखकर वैज्ञानिक ढंग से आत्मा के अस्तित्व पर प्रकाश डाला था। पाश्चात्य विद्वानों ने भी इस लेख की भूरि–भूरि प्रशंसा की थी। वैदिक साहित्य में प्रयुक्त शब्दावली यौगिक एवं योगरूढ़ि ही क्यों है। रूढ़ि (मात्र शब्द कोषीय अर्थ) क्यों नहीं? इस संबंध में भी आपके अनेक लेख प्रकाशित हुए जिनमें इन्द्र, मित्र, वरुण, रुद्र, अग्नि, वायु, वृच, आपः आदि संज्ञाओं का विस्तृत विवेचन किया गया और इनका वैज्ञानिक स्वरूप समझाया गया। अग्नि 'सप्तजिह्व' क्यों है, वायु की विभिन्न परतें और लहरें क्या हैं, सूर्य की रश्मियाँ ही 'अप्सरा' हैं आदि का बहुत ही सटीक वैज्ञानिक विवेचन आपकी रचनाओं में मिलता है। वेद ईश्वरीय वाणी है, ज्ञान–विज्ञान के भण्डार हैं, सृष्टि के आदि में ही वेद ज्ञान मानव को क्यों मिलता है, आदि गहन विषयों को बहुत ही युक्ति युक्त ढंग से और सप्रमाण मण्डित करके आपने विश्व को दाँतों तले अंगुलि दबाने को विवश कर दिया, अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा दिया और वेद की सार्वकालिकता एवं सार्वभौमिकता सिद्ध कर दी। कुल मिलाकर आपको यह धुन थी, आप शीघ्रता में थे कि सारा विश्व वेदमय हो जाए, वैदिक ध्वज दिग्दिगन्त में फहराए और इसके लिए आप रात–दिन कार्यरत रहे, अत्यधिक व्यस्त रहे। भूख, प्यास, आराम, नींद सबको तिलाञ्जलि देने का परिणाम यह हुआ कि आपका स्वास्थ्य गिरता गया और आप क्षय रोग से ग्रस्त हो गए। उपचार बहुत किया गया, पहाड़ों पर ले जाया गया किंतु सब व्यर्थ। डॉक्टर आराम करने को कहते लेकिन पंडित जी उनका परामर्श नहीं मानते थे। उनका शरीर तो घड़ी दो घड़ी आराम कर भी लेता था किंतु मस्तिष्क तो रात–दिन चौबीसों घण्टे आठों पहर, चौसठ की चौसठ घड़ी सतत् चलता रहता था। वे इसी जीवन में अपने ऋषि को पूर्णतया जीना चाहते थे, 'कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्' को साकार करना चाहते थे, अन्ततः वही अनहोनी घटित हो गई जिसकी आशंका थी अर्थात् 19 मार्च 1890 को आर्य जगत् का यह जाज्वल्यमान हीरा, यह अनमोल रत्न अपनी अलौकिक आभा पीछे छोड़कर सदा के लिये शून्य में विलुप्त हो गया। 'आर्यपत्रिका' ने 'हमारीक्षति' शीर्षक से श्रद्धाञ्जलि दी थी–

**"एक मनुष्य, एक असाधारण मनुष्य, एक अलौकिक मनुष्य, संस्कृत विद्या का एक सच्चा और अद्वितीय पण्डित, प्राचीन ऋषियों का एक सच्चा वंशज इस संसार से उठ गया।"**

इसके अतिरिक्त भी किसी ने उनको हमारा प्रसिद्ध व्याख्यान दाता, किसी ने 'अनन्य ऋषिभक्त' किसी ने 'महान वैज्ञानिक प्रतिभा' किसी ने 'योग का दीवाना' किसी ने 'उपनिषदों का भाष्यकार आदि कहकर स्मरण किया, श्रद्धाञ्जलियाँ दी।

प्रश्न तब भी था, प्रश्न आज भी है कि क्या रोने–धोने और श्रद्धाञ्जलियाँ देने मात्र से हमारी क्षतिपूर्ति हो जाएगी। रिक्त स्थान भर जाएगा? उत्तर है 'नहीं'। हमें उनका अनुकरण करना होगा, उनका अधूरा छोड़ा कार्य पूरा करना होगा उनकी शिक्षाओं को अपने आचरण में उतारना होगा। आर्य नेताओं को मिलबैठकर अपनी प्राथमिकताएँ, अपनी प्रतिबद्धताएँ पुनः निर्धारित करनी होंगी और भविष्य विषयक कार्यक्रम नए सिरे से बनाना होगा। इसके लिए, प्रथम और अन्तिम अनिवार्य शर्त यह है कि आर्य नेता अपने आपसी मतभेद, विवाद, फूट पूरी तरह से समाप्त कर दें। सभी आर्यजनों को साथ लेकर एक जुट हो कर ध्येय की ओर बढ़ें, सफलता अवश्य मिलेगी। कोई रोक नहीं सकता। यदि महात्मा हंसराज अथवा पं. गुरुदत्त की जयंती के शुभावसर पर हम यह पुण्य कार्य कर सकें तो जयंती मनाना वास्तव में ही सफल होगा और इन महापुरुषों के प्रति सच्ची श्रद्धाञ्जलि भी यही होगी। पुनः मूल विषय पर लौटते हुए मैं तो यही कहूँगा कि

**सूरज, चाँद का चक्र तो नित्य यहाँ चलता है।**
**हर पेड़ बहारों में हर साल फूलता–फलता है।**
**इतिहास के गर्भ में किंतु समा जाती है सदियाँ,**
**तब जाकर कहीं एक गुरुदत्त मिला करता है।**

पुनश्च–

**हे वैदिक मनीषी गुरुदत्त तुम्हें प्रणाम,**
**अनन्य ऋषिभक्त गुरुदत्त तुम्हें प्रणाम।**
**हे धर्मयुद्ध के अजेय महारथी हम सबका,**
**स्वीकार करो शत्–शत् प्रणाम।**

**जवाहर नगर,**
**पटियाला चौक, जीन्द (हरियाणा)**
**मो.: 9416294347, 01681–226147**

# सफल होने के लिए आर्यपन को अपनाओ

● भद्रसेन

हमारे आपस के सम्पर्क का सूत्र–**आर्य** शब्द ही है। यही हमारे सिद्धान्तों, विचारों और जीवन का भी केन्द्र बिन्दु है। सभी कोशों में आर्य शब्द का मुख्य अर्थ श्रेष्ठ, अच्छा, भला है। संसार का हर समझदार जब भी, जो भी, जैसा कुछ करना चाहता है। वह अपने हित की भावना से ही करता है।

ईश्वरीय ज्ञान रूप में मान्य वेद ने अपने पढ़ने, मानने वालों को आर्य शब्द से ही पुकारा है। अतः वेद का सन्देश है, कि एक आर्य ही संसार में प्रगति करता है, सर्वत्र, सफल होता है।

आर्यो! यह आर्य शब्द बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। तभी तो सारे भारतीय शास्त्रों में इस का भरपूर प्रयोग हुआ है। आर्य हमारा केवल (सामुहिक) नाम ही नहीं है अपितु प्रत्येक के लक्ष्य, उस की सिद्धि की प्रक्रिया, तड़त, भावना, चाहना को भी दर्शाता है। इस शब्द को गहराई से समझने के लिए जब हम विचार करते हैं, तो स्पष्ट होता है, कि आर्य शब्द ऋ धातु से बनता है, ऋ का गति अर्थ–ज्ञान–गमन और प्राप्ति इन तीनों अर्थों से भरा हुआ है। प्रथम किसी का ज्ञान, पुनः ज्ञान के अनुरूप क्रिया और फिर फल की प्रप्ति होती है। अर्थात् यह सब क्रियाशीलता से सिद्ध होता है। क्रियाशील ही सारी सिद्धियों, सफलताओं को प्राप्त करता है। क्रियाशील, आलसी, खाली–खाली मन शैतान का घर, सुविधा भोगी नहीं होता। आज सुविधा की लालसा ही से जीवन स्तर उठाया जा रहा है, और फिर एतदर्थ–जैसे–तैसे धन की दौड़ लग जाती है। क्रियाशीलता की संकेतार्थ ही जीव का एक नाम क्रतु भी है।

आर्य –अर्य का तद्धित रूप भी है। अर्थ का अर्य है– स्वामी, अतः स्वामी का पुत्र, स्वामी की भावना का प्रसार ही आर्य है। संसार रूपी रचना, उस का नियंत्रण जिस के हाथ में है, वह स्वामी है और वही ईश्वर है। इसीलिए निरुक्त ने आर्य का अर्थ ईश्वर पुत्र (अर्य) किया है। अर्थात् जिस में स्वामीपन, नियंत्रण भावना है, वह आर्य है। तब वह इन्द्रियों, विकारों, धन का दास न होकर स्वामी, नियंत्रक होता है। वह इन के नचाए नाचता नहीं, अपितु इन को नचाता है, आज्ञा देता है, नियंत्रण में रखता है।

आर्य का विपरीत शब्द दस्यु है। जिसका वर्णन वेद ने **अकर्मा दस्यु अभिनो अमन्तु अन्यव्रतो अमानुषः** (ऋ.10,22,8) रूप में किया है, अर्थात् जो निकम्मा, अविचारशील, बे–असूला और इन्सानियत से दूर है, वह दस्यु है। इस का सीधा सा भाव यह हुआ कि आर्य कर्मशील, विचारवान्, नियमपालक और माननीय गुणों (सहानुभूति, सदभाव, सहयोग) से भरपूर है।

अतः प्रिय आर्यबन्धुओ! और बहनों! आर्य के इस महत्त्व को समझो। प्रत्येक प्रकार से प्रत्येक क्षेत्र में सफल होने के लिए आर्यपन को अपनाओ। जिससे **'अहं भूमिददामार्याय'** (ऋ. 4,26,2) वेद का यह कथन सार्थक हो सके, कि जो कुछ उत्कृष्ट रचना, सफलता है, वह मैं आर्य=योग्य, पात्र को देता हूँ। अतः आर्यता= उत्कृष्ठता की माँग हैं, कि हम हर तरह से सर्वत्र उत्कृष्ट सिद्ध हों।

**182 शालीमार नगर,**
**होशियारपुर 146001**

# पर्यावरण शुद्ध रहे हमारा

● पण्डित वैदप्रकाश शास्त्री

आज चहुँदिशि ध्वनि, वायु, मृदा, जल, आकाश आदि सभी प्रदूषण की चपेट में आ चुके हैं। ऐसा कोई स्थान नहीं बचा जहाँ प्रदूषण ने अपनी उपस्थिति न दर्ज कराई हो। बस देखते जाइए–यत्र तत्र सर्वत्र। यह समस्या केवल राष्ट्रीय स्तर पर ही नहीं अपितु विश्व स्तर भी गम्भीरतम रूप धारण कर चुकी है। जिसका जन्मदाता भी तो मनुष्य ही है। जो पहले समस्या को जन्म देता है और फिर उसका समाधान ढूँढ़ता है। उस पर शोध होते हैं। अनेक लोगों को रोजगार मिल जाता है। स्थानीय, प्रान्तीय, राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार, गोष्ठियाँ आयोजित किए जाते हैं। विचार–विमर्श होता है। सुझाव दिए जाते हैं। उनका समर्थन, विरोध और संशोधन प्रस्तुत किए जाते हैं। तत्पश्चात् अगली बार अन्यत्र बैठक का प्रस्ताव प्रस्तुत करके अन्य देश का चयन करते हुए शुभकामनाओं के साथ सत्र समाप्त हो जाता है। बस, तब तक आगामी सत्र और करणीय कार्य की प्रगति की प्रतीक्षा कीजिए।

माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पेरिस में विभिन्न देशों के मध्य सम्पन्न हुई ''व्यापक पर्यावरणीय सहयोग सन्धि'' में अपने सटीक विचार अभिव्यक्त करते हुए समस्त विश्व को अपनी ओर आकृष्ट किया था। वस्तुतः इसकी शुद्धता बनाए रखना प्रत्येक व्यक्ति, परिवार, समाज, संस्था और राष्ट्र का परम कर्त्तव्य–कर्म और सर्वोच्च धर्म है।

नगरों, कस्बों, गाँवो एवं समस्त पृथ्वी पर कलंक बन कूड़ा–कचरा की ''यूज एण्ड थ्रो'' संस्कृति के कारण स्थिति और भी भयंकर हो गई है। जहाँ देखो वहीं कूड़े के ढेर लगे हैं। कुएँ, तालाब, नदियाँ, जलाशय आदि सभी प्रदूषित हो चुके हैं। शुद्ध पानी तो बस बोतलों में ही उपलब्ध है। सार्वजनिक रूप से तो अपेय पानी कहीं भी मिल जाएगा। अधिकांशजन अपेय पानी पर ही निर्भर हैं।

जब जल ही स्वच्छ नहीं तो स्वस्थ भारत कैसे बनेगा? यह विचारणीय है। इलेक्ट्रानिक–वेस्ट (ई वेस्ट, ई कचरा) भी प्रदूषण वृद्धि का प्रमुख कारक है। सभी प्रकार के छोटे–बड़े, कल–कारखाने, औद्योगिक इकाइयाँ, ईंट–भट्ठे, जलती पराली (पुआल) और धुँआ उगलती चिमनियां वायु को प्रदूषित करने में बहुत बड़ी भूमिका अदा कर रही हैं। उच्च ध्वनि में चलते टी.वी., डी जे, लाऊड्स्पीकर तथा एतादृश अन्य ध्वनि विस्तारक यन्त्र, कल –कारखानों की कर्कश ध्वनि ने व्यक्ति को बहरा बना दिया है, जिससे अन्य कुछ सुनाई ही नहीं देता। फिर प्रदूषण मुक्ति की ध्वनि कहाँ से सुनाई देगी? यह चिन्तनीय है।

इन विषम परिस्थितियों में ''स्वच्छ और स्वस्थ भारत'' का नारा देकर प्रदूषण को कहीं धुँधले चश्मे की नजर से तो नहीं देखा जा रहा है? जिससे चहुँ ओर विस्तृत प्रदूषण भी दृष्टिगोचर नहीं हो रहा!

वस्तुतः सभी प्रकार के प्रदूषणों से मुक्ति के लिए जनजागरण की अतीव आवश्यकता है। इसी विषय को लक्ष्य में रख कर अबाल–वृद्ध–समाज के बहुसंख्य छात्र–छात्राओं में नवचेतना जगाने हेतु ''वैदिक संस्कृति संरक्षण अभियान'' के अन्तर्गत प्रीनर्सरी से दूसरी कक्षा तक ''पर्यावरणीय रंग भरो प्रतियोगिता'' तथा प्राइमरी से कॉलेज स्तर तक ''पर्यावरणीय परीक्षा'' के माध्यम से ''वैदिक शिक्षा परिषद् फ़ाज़िलका'' सतत प्रयत्नशील रही है क्योंकि सभी प्रकार के प्रदूषणों से मुक्ति वैदिक संस्कृति का एक महत्वपूर्ण अभिन्न अंग है।

छात्र–छात्राएँ हमारे राष्ट्र के भावी कर्णधार हैं। अतः उन्हें सचेत करने की अतिशय आवश्यकता है। यह समस्त सत्कार्य पर्यावरण शुद्ध रखने के प्रति समर्पित निष्ठावान् उदारमना विद्यालय/महाविद्यालय के प्रमुखों, शिक्षकों, समाज–सेवारत महानुभावों, गणमान्य नागरिकों, श्रेष्ठीजनों, पर्यावरणविदों एवं सुधीवर्ग के सहृदयतापूर्ण सहयोग पर ही निर्भर है। आप सभी के द्वारा प्रदत्त पथप्रदर्शन भी लक्ष्य प्राप्ति में हमारे लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगा। इसी आशा, विश्वास एवं शुभकामनाओं के साथ उत्तराकांक्षी

**शास्त्री भवन, 4 ई, कैलाश नगर,**
**फाजिलका, पंजाब मो. 9463428299**

# माता शान्ति आर्या नहीं रहीं

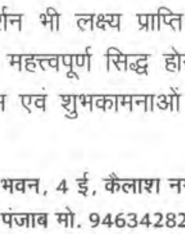

**श्री सत्यपाल आर्य (सहमंत्री, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं सचिव, डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी) की पूज्यनीय माता श्रीमती शान्ति आर्या, 90 वर्ष की आयु में, 25 अप्रैल, 2018 को अपना पार्थिव शरीर छोड़ गईं। माता श्रीमती शान्ति आर्या अत्यंत धर्मपरायणा, यज्ञ को समर्पित, आस्तिकता से भरी–पूरी, परिवार को अत्यंत पुरुषार्थ और संघर्ष से पालने वाली एक आदर्श महिला थीं। माताजी श्री संतलाल आर्य (पति– आयु 92 वर्ष), श्री सुभाष आर्य एवं श्री सत्यपाल आर्य (पुत्र), श्रीमती सरला, सुरक्षा, आशा और शारदा (पुत्रियाँ) के रूप में भरा–पूरा परिवार अपने पीछे छोड़ गई हैं।**

**अपने पति श्री संतलाल जी, जो आर्य समाज और वैदिक जीवन–पद्धति के प्रति मनसा–वाचा–कर्मणा समर्पित हैं, उनके आदर्शों को जीवित रखने में माता शान्ति आर्या ने जीवन–भर सहयोग किया। यह शरीर छोड़ने से बहुत दिन पहले माता शान्ति आर्या ने ये संकल्प लिया था कि मरणोपरांत उनका पार्थिव शरीर किसी मेडिकल कॉलेज को दान कर दिया जाए। उनके इस संकल्प के अनुरूप ही उनका पार्थिव शरीर 'महिला मेडिकल कॉलेज' खानपुर को शिक्षा हेतु भेज दिया गया।**

**दिवंगत आत्मा के लिए 27 अप्रैल को दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय के सभागार में एक शोक–सभा का आयोजन किया गया। खचाखच भरे इस सभागार में हिसार नगर के लगभग सभी धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक संस्थानों के लोग अपनी श्रद्धांजलि देने के लिए उपस्थित थे। बड़ी संख्या में डी.ए.वी. संस्थाओं से आए हुए प्राचार्य और अध्यापकों ने भी दिवंगत माता के प्रति श्रद्धाजंलि अर्पित की। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी के प्रधान डॉ. पूनम सूरी की ओर से विशेष शोक–संदेश लेकर सभा के महामंत्री श्री एस.के. शर्मा इस सभा में उपस्थित थे।**

**आर्य–जगत् परिवार दिवंगत आत्मा की शांति और सद्गति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता है।**

# आओ, मरना सीखें

● डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा

''अरे भाई, आप कौन हैं, क्या हैं? मैं नहीं जानता। मैं तो केवल इतना जानना चाहता हूँ कि लोग तो जीने के बारें में सीखते है और एक आप हैं कि आप लिख रहे हैं, 'आओ, मरना सीखें, यह बात मेरी समझ में नहीं आती।''

''मान्यवर! मैं भी आपके बारे में नहीं पूछना चाहता। मैं तो इतना ही पूछना चाहता हूँ कि उक्त शीर्षक में आपको क्या बुराई दिखाई देती है?''

''बुराई है, तभी तो कह रहा हूँ। जीना सीखा जाता है, मरना नहीं। मृत्यु तो स्वयं आ जाती है, न चाहते हुए भी।''

''पर ऐसी मृत्यु कितनी तरुण होती है, इस बारे में कभी सोचा है आपने?''

''मृत्यु तो मृत्यु है, इसमें सोचना क्या?''

''महोदय, बस यही गलती आप कर रहे हैं। मृत्यु को भी अपने अनुसार ढाला जा सकता है। जिस प्रकार चलती हुई गाड़ी को चालक अपने विचार के अनुसार मोड़ सकता है, उसी प्रकार मृत्यु को भी ज्ञान और साधना के अनुसार निश्चित दिशा में ढाला जा सकता है''

''कैसे''?

''कल्पना कीजिए, कहीं पर जल स्त्रोत बह रहा है। यदि उसे निश्चित दिशा न दी गई तो वह गंदे नाले में गिर सकता है। लेकिन यदि उसे किसी उपवन या खेत की ओर मोड़ दिया जाय तो वह विभिन्न फल–पौधों की उत्त्पति का कारण बन सकता है। उसी प्रकार मृत्यु के रहस्य को समझ कर मनुष्य अधोगामी होने के बजाय ऊर्ध्वगामी बन सकता है।

''भाई साहब, आप चतुरता प्रकट कर रहे हैं। *जल स्त्रोत का सम्बन्ध प्रकृति से* है परन्तु मृत्यु का सम्बन्ध तो शरीर और आत्मा से है।''

''कोई बात नहीं। आपको समझने के लिए दूसरा उदाहरण प्रस्तुत कर देता हूँ। कल्पना कीजिए, आप दिल्ली से मुम्बई की ओर जा रहे हैं। अब आप केवल मुम्बई के बारे में सोचेंगे, क्योकि दिल्ली छूट रही है और मुम्बई नगरी निकट आ रही है। इसी प्रकार हम जन्म तो ले चुके हैं अब हमें मृत्यु की ओर ही बढ़ना है तो हमें मृत्यु के बारे में ही सोचना पड़ेगा।''

''चलो, हमने आपकी बात मान ली, पर यह तो बताइऐ कि मरा कैसे जाए''?

''मैं कौन होता हूँ बताने वाला। मैं तो केवल महात्मा कबीर दास को उद्धृत करना चाहता हूँ जिन्होंने कहा है,

'मरना मरता जग मुआ पर मरन न जाना कोय।'

अर्थात् मनुष्य युग युगान्तरों से मर रहे है पर मरना किसी को नहीं आता। हे संसार के मनुष्यों!, तुम इस ढंग से मरो कि तुम्हें दुबारा न मरना पड़े। अर्थात् तुम्हें मुक्ति मिल जाए।''

दुबारा न मरने के लिए हमें क्या करना होगा?''

''हमें करना कुछ नहीं है, केवल समझना है और समझना भी यह है कि मृत्यु भी आनन्ददाची हो सकती है। परमात्मा के द्वार तक पहुँचने के लिए मृत्यु के पथ को पार करना आवश्यक है। कबीरदास जी के शब्दों में–

जेहि मरन से जग डरे, सो मेरे आनन्द।''

''मेरी बात का जबाव दीजिए। क्या हम जीने की कला सीख कर मृत्यु के बन्धन से मुक्त नहीं हो सकते?''

''बंधुवर! आपको याद दिला दूँ वह वेद वाक्य, जिसमें कहा गया है– 'मृत्योर्माऽमृतंगमय' अर्थात् पहले मृत्यु और फिर अमृतत्व के बीच मृत्यु सेतु है। इसे अवश्य पार करना होगा। तभी अमृत स्वरूप ईश्वर के दर्शन संभव हैं। इसीलिए मरणासन्न व्यक्ति को ध्यान में रखकर वेद संदेश देता है–' ओम् क्रतो स्मर' अर्थात् हे कार्यशील! व्यक्ति, जीवन के अन्तिम क्षणों में ईश्वर का स्मरण कर ले।

''महाराज जी, आपकी बात समझ में तो आ रही है लेकिन हम मरते ऐसी कौन सी गलती कर बैठते हैं कि हमें बार–बार मरना पड़ता है।''

''अब आए न रास्ते पर। कल्पना कीजिए, आप नदी पार करना चाहते हैं। जब तक आप नदी पार नहीं कर लेते, तब तक बार–बार छलांग लगानी ही पड़ेगी। इसी प्रकार जब तक व्यक्ति जन्म मरण के बन्धन से मुक्त नहीं हो जाता, तब तक वह आवागमन के चक्कर में फँसा ही रहेगा।''

''तो इसके लिए हमें क्या करना होगा?''

''यदि भवसागर को पार करना है तो हमें शरीर के भार को उतारना होगा। यदि आप सामान लाद कर नए कपड़े पहन कर नदी पार करना चाहें तो आप स्वयं भी डूबेंगे और सामान भी नहीं बचेगा। नदी वही पार कर पाता है जो शरीर के सारे कपड़े उतार देता है। जो जितना हल्का होगा वह उतनी जल्दी नदी पार कर पाऐगा। इसी प्रकार व्यक्ति को भव सागर पार करने के लिए विषय–वासनाओं के भार को उतारना आवश्यक है, काम क्रोधादि दुर्भावनाओं से मुक्त होना जरूरी हैं। जो साधक लोकैषणा, पुत्रैषणा और वित्तैषणा के भार से जितना अधिक हल्का होगा वह उतनी ही तीव्र गति से भवसागर को पार करने में सक्षम होगा।

"भाई साहब, प्रवचन देना या बोलना तो बहुत सरल है पर करना कठिन होता है।''

"करना उसके लिए कठिन है जिसमें वैराग्य और अभ्यास की न्यूनता है। भगवान् श्री कृष्ण ने यही संदेश दिया है:-

'अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते।'

शरीर के प्रति आसक्ति कम करने के लिए वैराग्य का होना आवश्यक है। जैसे फटे–पुराने, जीर्ण शीर्ण कपड़ों के प्रति मोह प्रकट करना उचित नहीं है। परलोक जाने के लिए सब कुछ यहीं छोड़ कर जाना आवश्यक है और तो, क्या अपना–अपना शरीर भी।

"मित्रवर!, भले ही शरीर के प्रति आशक्ति छूट जाए परन्तु सूक्ष्म वृत्तियाँ तो बनी रहती हैं, उनका क्या किया जाए?

"इन वृत्तियों को आध्यात्मिकता की चासनी में डुबाना चाहिए। भक्ति की सुगन्ध तथा साधना का माधुर्य आनें पर ही ये वृत्तियाँ अपना स्वभाव बदल देती हैं। अपने मृत्युंजय मंत्र का एक पाद पढ़ा होगा–'उर्वा रुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मोक्षीय मामृतात्' अर्थात् जैसे खरबूजा माधुर्य और सुगन्धि सम्पन्न होने पर बेल से स्वयं पृथक् हो जाता है वैसे ही साधक भी जब ईश्वर भक्ति की मधुरता और सुगन्ध से परिपूर्ण हो जाता है वह भी जन्म मरण के बन्धन से मुक्त हो जाता है''

"अन्त में एक प्रश्न और पूछना चाहता हूँ जिस मृत्यु के नाम से डर लगता है, उसका साक्षात्कार कैसे किया जा सकता है?''

"बताता हूँ बंधु!, जैसे जीवत्मा स्वयं को खाते हुए, पढ़ते हुए या हँसते हुए देखता है वैसे ही जिस दिन वह स्वयं को द्रष्टा के रूप में मरता हुआ देख लेगा और निस्पृह बना रहेगा, उस दिन वह मृत्यु का साक्षात्कार कर लेगा।''

"मेरे अजनवी बन्धु, बहुत–बहुत धन्यवाद।''

230, आर्य वानप्रस्थ आश्रम
ज्वालापुर (हरिद्वार)
मो0 9639149995

## श्री नन्दलाल गांधी को पुत्र शोक

बड़े दुःख का विषय है कि आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, दिल्ली के अंतरंग सदस्य, आर्य श्री नन्द लाल गांधी जी के पुत्र श्री सूरज गांधी का दिनांक 25.03.2018 को आकस्मिक निधन हो गया। श्रद्धांजलि सभा का आयोजन दिनांक 27.03.2018 को मानसरोवर कालोनी पार्क, रोहतक में हुआ।

श्रद्धांजलि सभा में स्थानीय आर्य समाज, रोहतक के सभी सदस्य एवं अधिकारियों ने श्रद्धांजलि दी। श्रद्धांजलि सभा में आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, हरियाणा के प्रधान श्री के.एल. खुराना जी, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिध सभा, दिल्ली के सहमंत्री श्री सतपाल आर्य जी, डॉ. धर्मदेव विद्यार्थी जी, गोकर्ण धाम के संचालक श्री श्री 1008 कपिलपुरी जी महाराज के अतिरिक्त अनेक प्राचार्यों और आर्य–नेताओं ने दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि प्रदान की। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान एवं डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्तृ समिति के प्रधान पद्मश्री पूनम सूरी जी का संदेश पढ़कर सुनाया गया।

आर्य जगत् परिवार शोकाकुल परिवार से संवेदनायें व्यक्त करते हुए दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करता है।

# दैनिक जीवन में अग्निहोत्र

● डॉ. धर्मेन्द्र कुमार शास्त्री

प्राचीन सनातन आर्य वैदिक संस्कृति के अनुसार मनुष्य के लिए नित्यकर्म बतलाए गए हैं जिन्हें सभी गृहस्थ, प्रतिदिन किया करें। धनी हो या निर्धन, बड़ा हो या छोटा, प्रत्येक के लिए आवश्यक होने से इन नित्य यज्ञों का क्षेत्र बड़ा विस्तृत है। ये मनुष्यमात्र के समान कर्म हैं, इसलिए इन्हें महायज्ञ कहते हैं। भगवान् मनु ने इन पाँच यज्ञों का अनुष्ठान नित्य एवं आवश्यक बतलाया है–

**ऋषियज्ञं देवयज्ञं भूतयज्ञं च सर्वदा।**
**नृयज्ञं पितृयज्ञं च यथाशक्तिर्न हापयेत्।।**

मनु. 4/22

जहाँ तक हो सके (**ऋषियज्ञं**) ब्रह्मयज्ञ (**देवयज्ञं**) देवयज्ञ (**भूतयज्ञं**) बलिवैश्वदेवयज्ञ (**नृयज्ञं**) अतिथि यज्ञ और (**पितृयज्ञं**) पितृयज्ञ को (**न**) नहीं (हापयेत्) छोड़ें।

महाभारतकार वेदव्यासजी के उपदेश अनुसार–

**अहन्यहनि ये त्वेतानकृत्वा भुञ्जते स्वयम्।**
**केवलं मलमश्नन्ति ते नरा न च संशयः।**

महाभारत अश्व 104/16

(**अहन्यहनि**) प्रतिदिन ये जो (**एतान्**) इन महायज्ञों को (**अकृत्वा**) किए बिना स्वयं (भुञ्जते) खाते पीते हैं, (**ते**) वे (**नराः**) नर (**केवलं**) केवल (**मलं**) मल खाते हैं (**च**) वस्तुतः इसमें (**सशंयः**) संशय नहीं है।

आइए! पञ्चमहायज्ञ पर क्रमशः विचार करते हैं सबसे प्रथम है **ब्रह्मयज्ञ–** प्रतिदिन प्रातः तथा सायंकाल प्रभु के चरणों में उपस्थित होकर, अपने विनय तथा प्रेम का प्रकाश करना और परमपिता के गुणों की आराधना करना ब्रह्मयज्ञ का एक भाग है।

स्वाध्याय अर्थात् मोक्षशास्त्रों का अध्ययन करना दूसरा भाग है। शास्त्रों को पढ़ने तथा उनकी बातों पर आचरण करने से उनकी सच्चाई का अनुभव होता है और धर्म में श्रद्धा बढ़ती है। मनुस्मृतिकार कहते हैं–

**यथा यथा हि पुरुषः शास्त्रं समधिगच्छति।**
**तथा तथा विजानाति विज्ञानं चास्य रोचते।।**

मनु. 4/20

(**यथा यथा**) ज्यों–ज्यों पुरुष शास्त्र को (**समधिगच्छति**) समझता जाता है (**तथा तथा**) त्यों–त्यों (**विजानाति**) विशेष जानता जाता है और उसको रुचिकर होता है। स्वाध्याय करने वाला आत्मा के स्वरूप से भलीभाँति परिचित होकर ठीक–ठीक चिन्तन करना सीख जाता है। सन्ध्योपासना–योग द्वारा आत्मिक मर्मों के मनन का अभ्यास हो जाता है। जब स्व ध्याय तथा भक्तियोग दोनों में सम्पन्न हो जाता है, तो प्रभु के प्रकाश का पात्र बनता है।

**देवयज्ञ–** इस प्रकार ब्रह्म अर्थात् ईश्वर और वेद के सत्संग से पवित्र होकर मनुष्य को चाहिए कि देवताओं का सत्संग करें। देव का अर्थ परमात्मा है। प्राकृतिक ज्योतियों, शक्तियों और विभूतियों को भी देव कहते हैं। विद्वान जनों को भी देव कहते हैं। साधक को उचित है कि ब्रह्मयज्ञ में विशेष रूप से प्रभु के आन्तरिक प्रकाश को देखने के लिए उत्सुक होकर अन्तर्मुख होने का अभ्यास करे। देवयज्ञ में उसकी बाह्य विभूतियों और चमत्कारों का ध्यान करता हुआ, उसके विराट् स्वरूप का चिन्तन करे।

**पितृयज्ञ–** प्रतिदिन अपने माता–पिता, आचार्य, गुरुजन तथा अन्य आश्रित सम्बन्धियों की सेवा तथा तृप्ति का ठीक–ठीक प्रबन्ध करना ही इस यज्ञ का तात्पर्य है। माता–पिता अपनी सन्तान के लिए जो–जो कष्ट उठाते हैं और अपना आराम छोड़कर अपने बच्चों के लिए जो कुछ करते हैं, उसका ऋण चुका सकना असम्भव है। अतः सन्तान अपने वृद्ध, माता–पिता इन सबके प्रति अपने कर्तव्य का पालन करे।

**अतिथियज्ञ–** यह चौथा महायज्ञ वहीं हो सकता है जहाँ पितृयज्ञ की प्रतिष्ठा हो। जब कोई विद्वान्, सदाचारी, संन्यासी, महात्मा, अनुभवी सज्जन हमारे घर आ पहुँचे, तो हमारा द्वार उसके स्वागत करने के लिए सदा खुला रहना चाहिए।

**बलिवैश्वदेवयज्ञ–** पाँचवें महायज्ञ द्वारा प्राणिमात्र से सहानुभूति प्रकट करने का उपदेश है। ब्रह्मयज्ञ में महान् प्रभु का ध्यान कर, साधक महान् बनना चाहता है क्योंकि जिस प्रकार के संकल्पमय आदर्श हमारे सम्मुख होते हैं, हम वैसे ही ढलते जाते हैं। देवयज्ञ में वह भौतिक देवताओं में प्रभु की ज्योति को अनुभव करता हुआ, उनके समान उपकारी बनने का यत्न करता है। पितृयज्ञ पारिवारिक एकता को बढ़ाने वाला है। अतिथियज्ञ जातीय प्रेम तथा संगठन का अभ्यास क्षेत्र है और अन्त में सब संकोच का त्याग सिखाने के लिए भूतयज्ञ आता है। जैसे ब्रह्म सबके हृदय में निवास करता है, ऐसे ही साधक ही प्राणीमात्र के हृदय में प्रविष्ट होकर उस ब्रह्म का अनुभव प्राप्त करे। किसी के हृदय में निवास करना हो तो उसके साथ सच्चा प्रेम और उसकी सदा सहायता करनी चाहिए।

**एसोसिएट प्रोफेसर (संस्कृत)**
**एस.जी.एन.डी. खालसा कालेज,**
**दिल्ली विश्वविद्यालय**
**मो. 9999426474**

☞ पृष्ठ 02 का शेष

## बोध कथाएँ...

''यह बेर क्या अभी गिरा है?''

अफीमची ने कहा–''नहीं भाई! रात से पड़ा है।''

उस व्यक्ति ने आश्चर्य से कहा–''रात से यह पड़ा है? तुम्हारे दोनों हाथ विद्यमान हैं। तुमने इस उठाया क्यों नहीं? बहुत आलसी प्रतीत होते हो तुम?''

पास लेटा हुआ दूसरा अफीमची बोला–''इसकी सुस्ती की न पूछो बाबूजी! रातभर कुत्ता मेरा मुँह चाटता रहा और इससे यह भी न हो सका कि उसे परे हटा दे।''

उस व्यक्ति ने आश्चर्य से कहा–''तुम्हारे भी तो हाथ हैं?''

अफीमची महोदय बोले–परन्तु मैं तो लेटा पड़ा था न! उठता कैसे?''

धत् तेरे की! मैं आपको निकम्मा और आलसी बनाना नहीं चाहता।

**हम तो चाखा प्रेम–रस, पत्नी के उपदेश**

गोस्वामी तुलसीदास के जीवन की वह घटना तो शायद आपने सुनी हो। युवक तुलसी का विवाह हुआ। पत्नी से उन्हें अत्यधिक प्यार था। इसके अतिरिक्त दूसरी कोई बात उन्हें सूझती नहीं थी।

एक दिन पत्नी के पिता हुए बीमार। वह उन्हें मिलने के लिए मायके चली गई। एक दिन बीता, दूसरा दिन बीता, परन्तु तुलसी के लिए चैन कहाँ? ऐसा प्रतीत हुआ जैसे जीवन की ज्योति बुझ गई है, अँधेरा छा गया है। तीसरे दिन रात हुई तो वे अधिक सहन नहीं कर सके। अँधेरी रात में घर से निकले। सामने नदी थी। नदी के उस पार गाँव था जिसमें उसकी पत्नी रहती थी। नौका तो कोई थी नहीं। अँधेरे में टटोला तो एक लड़की–सी मिली। उसका सहारा लेकर तैरकर परले किनारे पहुँच गए। किनारे के साथ ही पत्नी के पिता का घर था, परन्तु रात के समय द्वार बन्द था। आवाज नहीं दी कि लोग क्या कहेंगे! पत्नी की खिड़की के पास पहुँचे तो देखा कि ऊपर से एक मोटा–सा रस्सा लटक रहा है। उसी को पकड़कर ऊपर पहुँच गए। खिड़की से कूदकर पत्नी के कमरे में पहुँचे, तो आवाज से पत्नी जाग उठी; बोली–''कौन है?''

तुलसी ने धीरे से कहा–''मै हूँ, तुलसी।''

पत्नी ने जल्दी से उठकर दीप जलाया। प्रकाश हुआ। अपने पति को देखकर बोली–''महाराज! आप इस समय? परन्तु आप ऊपर कैसे आऐ, द्वार तो बन्द है?''

तुलसीदास बोले–''तुमने जो रस्सा खिड़की के साथ लटका रखा है, उसी को पकड़कर आया हूँ''

पत्नी ने कहा–''रस्सा! मैंने तो कोई रस्सा नहीं लटकाया। आओ, देखूँ तो!''

और दीपक के प्रकाश में देखा तो एक साँप था जो सरक कर ऊपर जा रहा था। पत्नी ने भयभीत होकर कहा–''यह है वह रस्सी, जिसे पकड़कर आप ऊपर आएं? और इस अँधेरी रात में आपको नदी पार करने के लिए नौका कहाँ मिल गई?''

तुलसीदास बोले–''नौका नहीं, एक लकड़ी मिली थी। उसी का सहारा लेकर आया हूँ।''

पत्नी ने दीपक के प्रकाश में नदी–किनारे को देखा। ध्यान से उस लकड़ी को देखा जो अब भी नदी के किनारे पड़ी थी। चौंककर बोली–''पतिदेव! क्या यही व वह लकड़ी है?''

तुलसी बोले–''हाँ, यही तो है!''

पत्नी ने कहा–''महाराज, ध्यान से देखिऐ, यह लकड़ी नहीं, किसी व्यक्ति की लाश है, अकड़ गई है।''

तुलसी हँसकर बोले–''यह तो मेरे प्यार का प्रमाण है। प्रेम के कारण मैंने लाश को लकड़ी समझा, साँप को रस्सी। मुझे तुम्हारे पास पहुँचना था सो पहुँच गया।''

पत्नी ने कहा–''महाराज! हाड़ और चाम के इस शरीर से जितना प्यार आपने किया, इतना यदि प्रभु से करते तो कहीं–से–कहीं पहुँच जाते।''

हाड़ मांस की देह मम, ता पर जितनी प्रीति।
तिसु आधो जो राम प्रति, अवसि मिटिहि भवभीति।।

तुलसीदास के हृदय को धक्का लगा; बोले–''फिर कहो देवी! क्या कहा तुमने?''

पत्नी ने फिर वही बात दोहरा दी। तुलसीदास फिर बोले–''एक बार और कहो, देवी!''

पत्नी ने तीसरी बार भी वही बात कह दी और तुलसीदास ने हाथ जोड़ दिऐ, सिर झुका दिया। आँसू–भरी आवाज में बोले–''मैं सोया हुआ था, तुमने मुझे जगा दिया। आज से तुम मेरी पत्नी नहीं, गुरु हो! अब मैं भगवान् का दर्शन ही करुँगा, नहीं तो यह जीवन उनका नाम लेते–लेते व्यतीत कर दूँगा।''

इस प्रकार वे रामभक्त गोस्वामी तुलसीदास बने और संसार को 'तुलसी रामचरितमानस' जैसा ग्रन्थ मिला।

प्रेम जाग उठे मन में, तो यह सब–कुछ होता है।

**कटे एक रघुनाथ संग, बाँधि जटा सिर केस।**
**हम तो चाखा प्रेम–रस, पत्नी के उपदेश।।**

**क्रमशः**

# हम यज्ञ, सत्संग व उपासना से जीवन पवित्र करें

● डॉ. अशोक आर्य

जीवन में पवित्रता के साधन रूप में हाथ धोना, मुँह धोना तथा स्नान का मुख्य स्थान है तो आध्यात्मिक क्षेत्र में यज्ञ पवित्रता का मुख्य साधन है। यज्ञ के अतिरिक्त सत्संग तथा उपासना अर्थात् प्रभु की समीपता से ही पवित्रता आ सकती है। ऐसा उपदेश यह मंत्र कर रहा है:-

**वसोः पवित्रमसि धतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्।**

**देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः।।**

ऋ. 1.3।।

**1. यज्ञ से पवित्रता आती है:-** परमपिता परमात्मा उपदेश करते हुए इस मन्त्र के माध्यम से सर्व प्रथम यह कहते हैं कि हे जीव! तूने यज्ञ किया है। इस यज्ञ के द्वारा अपने आप को पवित्र बना लिया है। यहाँ पर शतधारेण के माध्यम से बताया गया है कि इस यज्ञ के द्वारा पवित्र होने के लिए, इस यज्ञ को करने के लिए, शतशः अर्थात् सेकडों वे मन्त्रों के द्वारा वेद वाणियों का उच्चारण किया गया है, इन वेद के मंत्रों का गायन किया गया है। मंत्र कहता है कि केवल सैंकड़ों ही नहीं सहस्रों, हजारों वेद मंत्रों का उच्चारण इस यज्ञ में किया गया है। वेद मंत्रों की यह ध्वनि कानों में पड़ने से तू पवित्र हो गया है। यज्ञ की यह मंत्र प्रक्रिया सब को पवित्र कर देती है। इस प्रकार यज्ञ की इस मंत्र युक्त विधि से तूने इसे किया है, जिससे आप में पवित्रता आ गई है। इस विधि से तूने अपने आपको, स्वयं को पवित्र बना लिया है। वैदिक संस्कृति में विचरण करने वाला व्यक्ति अपने जीवन को यज्ञ जैसा ही बना लेता है। इस प्रकार का जीवन बनाने की प्रेरणा स्रोत उसे सैंकड़ों, हजारों में वेद वाणियों, वेद मंत्रों के उच्चारण व गायन से मिलती है। इसे ही यह मानव समय-समय पर प्रयोग करता रहता है।

मंत्र में पवित्रता का साधन यज्ञ को बताया गया है और जब इस यज्ञ को करते समय मंत्रों को गाकर बोला जाता है तो सोने पर सुहागे वाली बात आ जाती है। हम अपने शरीर को बाहर से तो स्नान आदि करके पवित्र कर लेते हैं किन्तु अन्दर के जीवन को, अन्दर के शरीर को पवित्र करने का आधार आध्यात्मिक ही होता है। इस कार्य के लिए उसे प्रतिदिन यज्ञ करने की आवश्यकता होती है। केवल यज्ञ मात्र से ही काम नहीं चलता, इस यज्ञ को करने के लिए अनगिनत वेद मंत्रों का भी गायन करना होता है। वेद मंत्र के गायन से हमारे शरीर के अन्दर प्रवाहित हो रहे रक्त में अल्ट्रासोनिक तथा सुपरसोनिक वेव्ज का, लहरों का सन्तुलन बन जाता है।, अनुपात ठीक हो जाता है, जिस से हमारा मस्तिष्क शांत व शीतल हो जाता है, हमारा ध्यान प्रभु की कांति में लगता है। इस प्रकार हम अन्दर से भी पवित्र हो जाते हैं। इसलिए प्रभु एक प्रकार से यह आदेश दे रहे हैं कि हमें वेदवाणी के उच्चारण के साथ, वेदवाणी के गायन के साथ प्रतिदिन नियमित रूप से यज्ञ करना चाहिए।

**2. दो काल उपासना तथा सूर्य पवित्र करें:-**

मंत्र के इस दूसरे भाग में जो उपदेश किया गया है, इस मंत्र ने दो भागों में बँट कर हम तक पहुँचाया है। मंत्र कहता है कि :-

**(क) हम दो काल प्रभु चरणों में आएँ:-** मंत्र

मंत्र अपने दूसरे चरण के इस प्रथम भाग में हमें उपदेश करता है कि वह परमपिता सब का प्रेरक है, सब को प्रेरणा देने वाला है, सब का मार्गदर्शक है, सब को हाथ पकड़ कर सुमार्ग पर ले जाने वाला है। वह पिता ही दिव्य गुणों का पुंज है, दिव्य गुणों का भंडार है, जितने भी दिव्य गुण हैं।, उन सब के केन्द्र बिन्दु वह प्रभु ही है। ऐसा प्रभु, हे मानव! तुझे अवश्य ही पवित्र करे, आध्यात्मिक रूप से पवित्र करे। जो मानव दिन में दो काल अर्थात् प्रातः व सायं, उस पिता को स्मरण करता है, उस पिता के निकट जाकर कुछ प्रार्थना करता है, उस प्रभु का स्मरण करता है, प्रभु के आर्शीवाद से उसका जीवन पवित्र बन जाता है। मानव के जीवन को पवित्र करने के लिए उपासना अर्थात् प्रभु की निकटता पाने से ऊपर कुछ भी नहीं है।

**(ख). सूर्य तुझे निरोग रखे:-** परम पिता परमात्मा को स्मरण करने, उसकी निकटता पाने तथा यज्ञ करने से जो पवित्रता हमें मिलती है, उसे हम आध्यात्मिक पवित्रता कहते हैं। इस के पश्चात् जिस पवित्रता को हम जानते हैं, उसे शारीरिक पवित्रता कहते हैं। यह पवित्रता शरीर के स्वच्छ व निरोग होने से होती है। इस पवित्रता को देने वाला मुख्य आधार सूर्य होता है। सूर्य को मंत्र में सविता का नाम दिया गया है। कहा गया है कि सविता देव अर्थात् सूर्य प्रातः काल उदय होता है तथा सबको कर्मों में लगा देता है। यह ज्योति का पथ देता है, सब को प्रकाश देता है। दिनभर के कार्य से निवृत्त होकर थका हुआ प्राणी रात्रि को विश्राम करता है। इस विश्राम के पश्चात पुनः प्रातःकाल का निमंत्रण लेकर सूर्य आता है। दिन निकल आता है, सब ओर प्रकाश ही प्रकाश होता है सब लोग अपने बिस्तर को छोड़ देते हैं। पक्षी भी चहचहाने लगते हैं। बड़ा ही सुहाना दृश्य बन जाता है। इस प्रकार सब लोग जागृत होते हैं तथा अपने-अपने कामों में लग जाते हैं। मानो सूर्य उन्हें अपने काम करने के लिए प्रेरित कर रहा हो। इस प्रकार सूर्य जहाँ हमें हमारे काम में लगाता है, वहाँ इस सूर्य के प्रभाव से सब प्रकार के कीटाणु, सब प्रकार के रोगाणु इस सूर्य के तेज के आगे क्षीण हो जाते हैं, नष्ट हो जाते हैं। अतः सूर्य हमें निरोगता व पवित्रता देता है।

**3. सत्संग से उत्तम मनों वाले हों:-** हे मनुष्य तूने सैंकड़ों सहस्रों वेदवाणियों का पाठ किया है, इन वेदवाणियों का स्मरण किया है, इन्हें गाया है तथा इन के साथ तूने यज्ञ किया है। इससे अपने आप को तूने पवित्र बनाया है ऐसे पवित्र मानव के साथ तू सम्पर्क कर, ऐसे पवित्र मानव का साथ बन, ऐसे पवित्र व्यक्तित्व वाले पुरुषों का साथ करने से ही तू अच्छी प्रकार से, उत्तम विधि से पवित्र करने वाला बना है। अब तेरे अन्दर भी ऐसी शक्ति आ गई है कि जिससे तू अपने साथ ही साथ दूसरों को भी पवित्र करने के योग्य, पवित्र करने वाला बन गया है।

यह कहावत भी है जैसे का साथ करोगे वैसा ही बनोगे। इसलिए ही माता-पिता सदा अपने बच्चों को सूझवान, दूसरों के सहायक, आज्ञाकारी तथा बुद्धिशील, मेहनती बच्चों का साथ बनाने का उपदेश देते हैं ताकि उनके बच्चे भी वैसे ही बन सकें। यह वेद मंत्र भी कह रहा है कि हे मानव! तू आज्ञाशील अर्थात् प्रतिदिन दो काल यज्ञ करने वालों को अपना साथी बना, तू उत्तम ज्ञानी को ही अपना मित्र बना। जब तू ऐसे लोगों के सम्पर्क में रहेगा तो तू भी यज्ञशील बनेगा, ज्ञानी बनेगा, वेदवाणियों का ज्ञान करने वाला बनेगा, पवित्र बनेगा। इस प्रकार धीर-धीरे ऊपर उठते हुए, उन्नति करते हुए तू उत्थान को प्राप्त करने में सफ़ल होगा। जीवन की सिद्धियों को पाने में सफ़ल होगा।

जो सत्संग के वातावरण में रहता है, वह व्यक्ति पापाचार से सदा दूर रहा है। जब पापों से दूर हो जाएँगे तो स्वयमेव ही हित साधक, पुण्य के तथा पवित्र कार्यों में ही लगेंगे। यह कार्य सत्संग ही करता है, जिस के कारण हमपाप से मुक्त हो कर सर्वहितकारी कार्य करते हैं। वेद के इस मंत्र के माध्यम से यह प्रार्थना की गई है कि हे प्रभु! ऐसी दया करो कि हमारे सब मित्र, सम्बंधी आदि सत्संग कराए हुए उत्तम तथा पवित्र मनों वाले हों। पवित्र बनने के लिए इस मंत्र में तीन उपाय बताए गए हैं:-

**3. यज्ञमय जीवन:-** हम अपने जीवन को यज्ञमय बनाएँ। प्रतिदिन यज्ञ करें। सदा यज्ञीय कार्यों में लगे रहें।

**(अ) प्रभु की उपासना:-** पवित्र बनने के लिए हमें प्रभु की निकटता चाहिए। अतः सदा प्रभु की उपासना करें। अपना आसन प्रभु के समीप लगाएँ।

**(ई) ज्ञानियों व यज्ञीय व्यक्तियों के सम्पर्क में रहें:-** प्रभु कहते हैं कि जब हम ज्ञानी लोगों का, विद्वान लोगों के सम्पर्क में रहते हैं। जब हम नित्य प्रति यज्ञ करने वाले, परोपकारियों के सम्पर्क में रहते हैं, तो उन के से गुण अपने आप ही हममें आने लगते हैं। अतः इस प्रकार के उपायों को व्यवहार में लाने वाले व्यक्तियों से परमति कह रहे हैं कि वास्तव में तूने वेदवाणी का उत्तम प्रकार से दोहन किया है। इन वाणियों का अच्छी प्रकार से प्रयोग किया है। इस का ठीक से सदुपयोग किया है। इन के प्रयोग से, इन के दोहन के कारण ही उन्नति पथ पर बढ़ते हुए, ऊपर उठते हुए परमेष्ठी को प्राप्त किया है। इतना ही नहीं यज्ञशील बनकर तूने सब का पालन किया है, यज्ञशील बनकर तूने सब के कष्टों को दूर किया है, सब को निरोग किया है, इस कारण तू प्रजापति भी बन गया है।

**लोअर आई पॉकेट-1 प्लाट 61/1**
**रामप्रस्थ ग्रीन सैक्टर-7 वैशाली**
**जिला गाजियाबाद उ.प्र.**
**मो. 09718528068**

# सृष्टिकर्त्ता ईश्वर हमारा आचार्य है

● मनमोहन कुमार आर्य

आचरण की शिक्षा देने वाले विद्वान, शिक्षक व मनुष्य को आचार्य कहते हैं। यह आचार्य पद प्रायः हमारे विद्यालयों व गुरुकुलों में अध्यापन कार्य करने वाले गुरुओं के लिए प्रयोग में लाया जाता है। यह उचित ही है क्योंकि गुरुकुल के शिक्षण विद्यार्थियों को आचरण के साथ धर्म व कर्म की शिक्षा भी देते हैं। महर्षि दयानन्द ने संस्कार विधि में वृहद् अग्निहोत्र से पूर्व स्तुति, प्रार्थना व उपासना के आठ मंत्रों का विधान कर उनके हिन्दी भाषा में अर्थ भी दिए हैं। इन स्तुति मंत्रों के सातवें मन्त्र का अर्थ बताते हुए लिखा है कि वह परमात्मा अपना गुरु, आचार्य, राजा और न्यायाधीश है। यह भी कहा है कि अपने लोग मिलकर उसकी भक्ति किया करें। महर्षि दयानन्द ने यह अर्थ मन्त्र में आए पदों 'स विधाता' का किया है। ऋषि दयानन्द जी वेदों के उच्च कोटि के विद्वान थे। वे वेदों के सर्वत्र प्रामाणिक अर्थ करते हैं। अतः संसार का रचयिता ईश्वर सभी मनुष्यों का आचार्य सिद्ध होता है। अब यह जानना रहता है कि ईश्वर हमें कब व कैसे आचरण की शिक्षा देता है।

ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वव्यापक व सर्वातिसूक्ष्म सत्ता है। आँखों से वह किसी को दिखाई नहीं देती। संसार में अनेक ऐसे भौतिक सूक्ष्म पदार्थ हैं जो आँखों से दिखाई नहीं देते। वायु व अनेक गैसें भौतिक पदार्थ हैं। यह भी आँखों से इसलिए दिखाई नहीं देते क्योंकि आँखों की देखने की क्षमता से भी सूक्ष्म व सबसे बड़ा, सबसे पास व सबसे दूर भी होने से दिखाई नहीं देता है। वह जीवात्माओं को वेदों के द्वारा शिक्षा देता है। सृष्टि के आदि काल में उसने चार ऋषियों, अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा को चार वेदों का ज्ञान दिया था। इस वेद ज्ञान में मनुष्यों के लिए आवश्यक सभी प्रकार के आचरणों की शिक्षा है। सत्य बोला और धर्म पर चला, यह भी वेदों की शिक्षा का सार है। माता, पिता, आचार्य, राजा, विद्वान् यह सब हमारे आदरणीय एवं सम्मानीय हैं इसकी शिक्षा भी वेद ज्ञान से मिलती है। जीवात्मा व ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव सहित संसार के समस्त भौतिक पदार्थों का ज्ञान भी वेद से होता है। आज हमें सभी वेद हिन्दी तथा अंग्रेजी कुछ अन्य भाषाओं के भाष्यों व टीकाओं सहित सुलभ हैं। हम इन भाष्यों से वेद के एक एक पद व शब्द का अर्थ जान सकते हैं। महर्षि मनु जी ने, जो वेदों के आधिकारिक विद्वान् थे और जिनका सृष्टि के आदिकाल से जन्म हुआ था। कहा है कि 'वेदऽखिलो धर्ममूलम्' अर्थात् वेद की समस्त शिक्षाएँ व मान्यताएँ ही धर्म का मूल अर्थात् आधार है। संसार के अन्य जितने भी ग्रन्थ व धर्मग्रन्थ हैं, उनमें जहाँ–जहाँ धर्म विषयक बातें पायी जाती हैं वह सब वहाँ वेदों से ही गई हैं अथवा उन्होंने वह वेदों से ही ली हैं। इसे उदाहरणों व युक्तियों से सिद्ध किया जा सकता है। यह भी जान लें कि धर्म में मनुष्य के द्वारा किए जाने वाले आचारण की सभी शिक्षाएँ सम्मिलित हैं।

योग भी ईश्वर से जुड़ने व उससे ज्ञान प्राप्त करने का एक साधन है। मनुष्य जब योगाभ्यास करते हुए ध्यानावस्थित होता है तब वह जिस विषय का ध्यान करता है उसको वह विषय प्रत्यक्ष ज्ञात हो जाता है। ध्यानावस्था में ईश्वर का ध्यान करते हुए योगी मनुष्य को समाधि अवस्था में ईश्वर का साक्षात्कार होता है। ईश्वर से इतने विषयों का साक्षात् करना ईश्वर के साक्षात्कार से किंचित सरल है। अतः ध्यानावस्था में भी ईश्वर हमें इच्छित विषयों का ज्ञान कराता है। हमारा अनुमान है कि वैज्ञानिकों ने जो आविष्कार किए हैं वे उन्होंने उन विषयों का विचार, चिन्तन और ध्यान करते हुए ही किए हैं। उनका ऐसा करना भी ईश्वर से ज्ञान प्राप्ति के अन्तर्गत ही आता है। भले ही वह इस तथ्य को न जानते हों परन्तु उन्हें चिन्तन व ध्यान करते हुए जो ज्ञान मिला है व मिलता है वह सर्वव्यापी व सर्वान्तर्यामी ज्ञानस्वरूप ईश्वर से ही मिलता है। अतः सभी प्रकार से ईश्वर मनुष्यों का आचार्य सिद्ध होता है। योगदर्शनकार महर्षि पतंजलि जी ने कहा है कि ईश्वर संसार के सभी मनुष्यों का प्रथम गुरु है, इस कारण कि उसने सृष्टि के आरम्भ में वेदों का ज्ञान व उपदेश चार ऋषियों को किया व उनके द्वारा अन्य सभी मनुष्यों को भी कराया था वही परम्परा आज भी विद्यमान है।

हम गायत्री मन्त्र का पाठ व जप करते हैं। इसमें हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि **'धियो यो नः प्रचोदयात्'** अर्थात् ईश्वर हमारी बुद्धि को श्रेष्ठ मार्ग पर चलाने व चलने की प्रेरणा करे। हमने प्रत्यक्ष अनुभव किया है कि गायत्री मन्त्र का अर्थ सहित जप करने से मनुष्यों की बुद्धि तीव्र व पवित्र होती है और ऐसा करके मनुष्य धर्मात्मा अर्थात् धर्माचरण करने वाला बनता है। इससे यह ज्ञात होता है कि गायत्री मन्त्र का जप करने पर ईश्वर हमारी बुद्धि को श्रेष्ठ व पवित्र बनाने के साथ हमें सत्प्रेरणा द्वारा हमारे जीवन का मार्गदर्शन करता है, जिससे हम जीवन में बुराइयों से बचते हैं और अभीष्ट की ओर बढ़ते व सफल होते हैं। वेदों का जब हम स्वाध्याय करते हैं तो मन्त्रों को पढ़ते हुए हमें जो ज्ञान प्राप्त होता व बोध होता है वह भी हमें हमारी आत्मा में ईश्वर कराता है। इसका कारण हैं कि वेद मन्त्रों की रचना ईश्वर से हुई है। भाषा का ज्ञान प्राप्त कर जब हम उन मंत्रों को पढ़ते हैं तो उससे मिलने वाला ज्ञान एक प्रकार से हमें ईश्वर द्वारा ही होता है क्योंकि वह वेदमन्त्र साक्षात ईश्वर व ईश्वरस्वरूप होते हैं। इस प्रकार से ईश्वर हमारा व सभी मनुष्यों का प्रथम व वर्तमान में भी आचरण की शिक्षा देने वाला आचार्य सिद्ध होता है। हमें प्रयास करना चाहिए कि हम वेदों का स्वाध्याय करते हुए वेदों से जुड़े रहें। ऐसा करके हमें अपने भावी जीवन तथा परजन्म भी सुधरता है। हम स्वाध्याय व उपासना से जो ज्ञान प्राप्त करते हैं उसे अन्यों में प्रचारित व प्रसारित करके भी हम ईश्वर की आज्ञा का पालन करते हुए जीवन को सफल कर सकते हैं। अतः ईश्वर हमारा आचार्य है। उससे प्राप्त शिक्षाओं व ज्ञान का प्रचार कर हम भी उसके अनुयायी आचार्य बन व कहला सकते हैं। इसी के साथ इस लेख को विराम देते हैं। ओ३म् शम्।

**196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001**
**फोन: 09412985121**

# अपाला आत्रेयी

● **शिव नारायण उपाध्याय**

अपाला आत्रेयी जैसा कि उसके नाम से ही विदित हो रहा है अत्रि वंश से सम्बन्ध रखती है अपाला आत्रेयी ऋ. मं 8 सूक्त 91 की ऋषिका है। इस सूक्त में कुल सात मंत्र हैं जिनमें मुख्य रूप से यह वर्णन है कि यदि कोई ब्रह्मचारिणी कन्या वेदाध्ययन करते समय ही अस्वस्थ हो जाए तो उसे सोम लतादि ओषधियों के द्वारा आपने को निरोग कर लेना चाहिए। स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर शिक्षा पूरी करनी चाहिए। विवाह शिक्षा पूरी कर लेने और पूर्ण स्वस्थ होने पर ही करना चाहिए। हम अपाला द्वारा विचारित ऋचाओं का अध्ययन करते हैं–

**कन्या 3 वाखायती सोममपि सुताविदत्।**
**अस्तं भरन्त्याब्रवीदिन्द्राय सुनवै त्वाशक्राय सुनवै त्वा ।। ऋ. 8.91.1.**

पदार्थ– (वार) (पति द्वार) वरण को (अवायती) स्वीकार करती हुई (कन्या) कन्या जो (सुता) (शारीरिक दृष्टि से) निचुड़ गई हो वह (सोमम्) सोमलतादि ओषधियों के रोग नाशक रस को (अपि) निश्चय ही (अविदत) प्राप्त करें और प्राप्त करके (अस्तम् भरन्ती) घर आती हुई उस रस के प्रति मन ही मन यह (अब्रवीत्) कहे कि (त्वा) तुझ सोम को मैं (इन्द्राय) रोगादि दुःख विदारकता के लिए (सुनवै) निष्पादित करती हूँ (शकाय) समर्थ होने के लिए (सुनवै) सम्पादित कर रही हूँ।

भावार्थ– यदि कन्या किसी रोग विशेष के कारण निर्बल और निस्तेज हो जाए तो उसको विवाह से पूर्व सोमलतादि ओषधियों का सेवन करके अपने को स्वस्थ और शक्ति शाली बना लेना चाहिए।

**असो य एषि वीरको गृहं विचाक शत्।**
**इमं जम्भसुतं पिब धानावन्तं करम्भिणमपूपवन्त मुक्थिनम ।।2।।**

पदार्थ– (असौ) वह जो (वीरकः) शरीर और आत्मा को पूर्ण बलशाली बनाने वाला (सोमरस) (गृहं गृहं) घर–घर में अर्थात् जीवात्मा के निवास भूत शरीर को (विचाक शत्) विशेष रूप से कान्तिमान् बनाता हुआ (एषि) सक्रिय है। (इमम्) इसको हे इन्द्र। रोगदि दुःखों को काटने के लिए कृत संकल्प मेरे आत्मन्। (पिब)सेवन कर। यह जो (जम्भसुतं) ओषधि को मुख में चूस कर निकाला गया है (धानावन्तम्) पुष्टि प्रद है। (करम्भिणम्) सभी दिव्य पदार्थों से मिश्रित है। (अपूपवन्तम्) दुर्गन्धित न होने के पदार्थ से युक्त है और जो (उक्थिनम्) प्राण की शक्ति से संयुक्त है, शरीर को स्फूर्ति देता है। भावार्थ – सोमलतादि ओषधियों का जो रस मुँह में चबाया जाता है उसमें पौष्टिक और दिव्य गुण वाले पदार्थों का मिश्रण है साथ ही यह सड़ता भी नहीं है और प्राण शक्ति देने वाला है।

सोम रस की मात्रा पर नियन्त्रण रखना चाहिए।

**आ चन त्वा चिकित्सा मोऽधि त्वा मेमसि ।**
**शनैरिक शनकैरिवेन्द्रायेन्दो परि स्रव ।।**
**ऋ. 8.91.3.**

पदार्थ– हे (इन्दो) सोमरस की आह्लादक बूँद (शनैः इव शनकैः इव) धीरे–धीरे (इन्द्राय) रोगादि दुःख निवारक शक्ति प्रदान करने के लिए (परिसव) संचित हो। हम (त्वा) तेरे (न, चन, अभि, ईमरि) गुणावगुणों को नहीं जानते ऐसा नही हम भली भाँति जानते हैं, इसलिए (त्वा) तुझ पर (चिकित्सामःच) नियन्त्रण भी रखते हैं।

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

# महिलाएँ स्वावलम्बी बनें

● रीना जायसवाल

वर्तमान समय में महिलाओं को आत्मनिर्भर होना आवश्यक है। भारत में विकसित देशों की तुलना में बहुत कम महिलाएँ साक्षर हैं। नगरीय क्षेत्रों में शिक्षा के प्रति जागरुकता बढ़ी है परन्तु ग्रामीण क्षेत्र अब भी शिक्षा के प्रति उदासीन हैं। शिक्षा प्राप्त करने से व्यक्ति में विवेक आता है, उचित–अनुचित पर विचार, तार्किक शक्ति का विकास एवं बौद्धिक ज्ञान प्राप्त होता है।

महिलाएँ आजकल विभिन्न क्षेत्रों में उन्नति कर रही हैं। महिलाएँ आजकल उच्चशिक्षा प्राप्त करके विभिन्न उच्चपद प्राप्त कर रहीं हैं। उनमें जागृति आई है शिक्षा प्रसार के कारण विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में बैठकर उच्चपदों पर आसीन हो रही हैं। प्राइवेट व सरकारी कार्यालयों में कम्प्यूटर प्रतिष्ठानों में व्यावसायिक क्षेत्रों में निरन्तर इनकी सहभागिता बढ़ रही है।

उच्चशिक्षा प्राप्त करने के बाद महिलाओं को विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों को पढ़कर रोजगारपरक बनना चाहिए। पत्रकारिता का क्षेत्र, ब्यूटी पार्लर, विभिन्न प्रकार के पेन्टिंग व सिलाई कढ़ाई केन्द्र, खिलौना बनाने का प्रशिक्षण केन्द्र, टाइपराइटिंग इंस्टीच्यूट, कम्प्यूटर सेन्टर, रेडिमेट गार्मेन्ट उद्योग, फोटोग्राफी ट्रेनिंग, इलेक्ट्रोस्टेट सेन्टर, फल संरक्षण, जैम जैली अचार उद्योग, मसाला उद्योग, लेडिज़ फैशन शॉप आदि विभिन्न क्षेत्रों में कार्य आरम्भ करके मेहनत के अनुसार हजारों रुपए प्रतिमास कमा सकती हैं। इन क्षेत्रों में महिलाओं को आगे आना चाहिए।

विवाह होने के बाद भी महिलाएँ पति की आय बढ़ाने में सहायक हो सकती हैं। महंगाई के इस युग में मध्यमवर्गीय परिवार के पति व पत्नी दोनों धन कमा कर विभिन्न सुख–सुविधाएँ प्राप्त कर सकते हैं।

आजकल ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं को पुरुषों से हीन समझा जाता है। कई क्षेत्र में महिलाओं की उपेक्षा की जाती है। ग्रामीण महिलाएँ विभिन्न अन्धविश्वासों से ग्रस्त हैं। लड़कियों को आज भी कुछ स्थानों पर स्कूलों में नहीं भेजा जाता। कुछ स्थानों में उन्हें सामान्यशिक्षा के पश्चात् उनकी शिक्षा समाप्त कर दी जाती है। इसके पीछे कुछ अभिभावक यह तर्क देते हैं कि यदि इन्हें उच्चशिक्षा दिला देंगे तो योग्य वर विवाह के लिए नहीं मिलेगा। समाज में व्याप्त इन भ्रान्तियों को दूर करना होगा। महिलाएँ जब शिक्षित होंगी तब वह विवाह के बाद परिवार की जिम्मेदारी अच्छी तरह से सम्भाल सकेंगी व बच्चों को स्वयं पढ़ा सकेंगी तथा पति के विभिन्न कार्यों में सहयोग दे सकेंगी।

आज भी समाज में महिलाओं को पुरुषों की समकक्षता प्राप्त है। इस प्रकार के कानूनी अधिकार प्राप्त होने पर भी पिछड़ी हुई हैं। समाज में महिलाओं की सुरक्षा हेतु हिन्दू विवाह अधिनियम 1955, दहेज विरोध अधिनियम 1961, अस्पृश्यता अधिनियम घरेलू हिंसा अधिनियम महिलाओं के प्रति होने वाले अपराधों के विरुद्ध अनेक कानून बने हुए हैं। जागृति के अभाव में इसका लाभ महिलाएँ नहीं उठा पा रही हैं।

महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति सजग होना होगा। आवश्यकता पड़ने पर महिलाओं को प्राप्त अधिकारों का प्रयोग करना होगा। महिलाओं के विरुद्ध होने वाले अपराधों के सम्बन्ध में उन्हें कानूनों की जानकारी होनी चाहिए। दहेज के सम्बन्ध में कानून बना हुआ है। परंतु यदि ससुराल के दहेज कम लाने पर पत्नी को प्रताड़ित किया जाता है तथा अन्य प्रकार से अपमानित किया जाता है, उपेक्षा की जाती है, कहीं–कहीं अभद्र व्यवहार किए जाते हैं और ऐसी स्थिति में महिला को आगे आकर दोषी व्यक्ति के विरुद्ध दहेज निरोध अधिनियम के अनुसार कार्यवाही करनी चाहिए। पहले महिलाओं को समझौते का प्रयास करना चाहिए। विशेष परिस्थितियों में महिलाएँ विवाह विच्छेद कर सकती हैं।

यदि महिला यह देखे कि उसकी जानमाल को खतरा है, पति योग्य नहीं है, पति भरण–पोषण नहीं कर सकता, अभद्र व्यवहार करता हो तथा अन्य अनेक कारणों से उसके साथ रहना सम्भव नहीं है तो ऐसी स्थिति में हिन्दू विवाह अधिनियम के अनुसार विवाह विच्छेद करा सकती हैं और भरण–पोषण स्वतन्त्र रूप से कर सकती हैं। उसके पश्चात् वह स्वावलम्बी होकर अपनी कोई व्यवस्था आरम्भ कर सकती है। ऐसा देखा गया है कि तलाक की स्थिति में वह अपने को असहाय समझती है छोटी–छोटी समस्याओं तथा छोटे–मोटे लड़ाई झगड़ों को लेकर तनाव में आ जाती हैं तथा आत्महत्या तक कर लेने की सोचती हैं। यह सब बातें उन्हें मन में नहीं लानी चाहिए। वह अपनी मेहनत व लगन से आजीविका पूरी करने के लिए कार्य कर सकती हैं। आजकल बैंको से ऋण प्राप्त करके वे अपना कार्य शीघ्र आरम्भ कर सकती हैं। इसी तरह रोजगार कार्य प्रारम्भ के लिए प्रधानमंत्री रोजगार योजना, तथा अनेक रोजगार योजनाएँ जिला उद्योग केन्द्र से संचालित होती हैं उनका लाभ वे उठा सकती हैं। यदि उनके पास धन नहीं है तो विभिन्न स्कीमों के द्वारा छोटा–मोटा उद्योग रुचि के अनुसार स्थापित कर सकती हैं। उन उद्योगों की स्थापना के लिए जिला उद्योग केन्द्र मदद करता है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि महिलाएँ विदेशों की तरह प्रत्येक क्षेत्र में आगे आएँ। उच्चशिक्षा प्राप्त करके उन्हें इन्जीनियर, डॉक्टर, अध्यापिका, आर्थिक व राजनैतिक क्षेत्र, सामाजिक क्षेत्र में आगे आना चाहिए।

नारी को भारतीय समाज में प्राचीनकाल से ही उच्चस्थान प्राप्त है– **''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता''** जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ देवता रमण करते हैं।

नारी को जीवन में अनेक क्षेत्रों में विभिन्न भूमिकाएँ निभानी पड़ती हैं। बेटी, बहन, पत्नी, माँ, सास तथा अन्य सामाजिक बन्धनों के रूप में कार्य करना पड़ता है। नारी को जिस क्षेत्र में आगे जाना हैं उसी के अनुरूप शिक्षा आदि अर्जित करनी चाहिए, जिससे वह मन चाहा स्थान आदि अर्जित कर सकें।

नारी को समाज में विभिन्न अन्धविश्वासों को दूर करने के लिए प्रयत्न करना चाहिए। अशिक्षा, अन्धविश्वास, आडम्बर, दिखावा, जादू–टोना भूतप्रेत आदि को दूर करने का प्रयास करना चाहिए। इसी प्रकार विवाह की सही आयु भारतीय संविधान के अनुसार 18 वर्ष की लड़की तथा 21 वर्ष के लडके की है। बाल विवाह का विरोध करना चाहिए। इसी प्रकार दो बच्चों को ही आदर्श परिवार माना गया है। लड़का या लड़की में भेद न करते हुए उन्हें दो बच्चों को जन्म देकर उचित व नैतिक शिक्षा प्रदान करें, जिससे वे बच्चे राष्ट्र की प्रगति में सहायक हों।

भारतीय महिलाओं को समय के अनुरूप अपने को परिवर्तित करना होगा। आज महिलाओं में व्याप्त पिछड़ापन उनकी उन्नति में बाधक है। महिलाओं को सम्मिलित जागृति लानी होगी। अन्धविश्वास व आडम्बरों कें विरुद्ध आवाज उठानी होगी।

प्राचीनकाल में भारतीय नारी की स्थिति ऊँची थी। मध्यकाल में नारी की स्थिति गिरी और वर्तमान समय में नारी सम्मानजनक स्थान प्राप्त करने के लिए अग्रसर है। यदि हमें समाज में आगे बढ़ना है तो प्रत्येक नारी को जीवन में अपना एक लक्ष्य बनाकर निरन्तर प्रयास से ही वे अपना लक्ष्य प्राप्त कर सकती हैं।

आज समाज में नर एवं नारी भौतिकवादी चका–चौंध की ओर बढ़ रहे हैं। अपनी प्राचीन व गौरवमयी तथा मानसिक शान्ति प्रदान करने वाली अपनी आध्यात्मिक संस्कृति को भूलकर विदेशी संस्कृति की ओर आकृष्ट हो रहे हैं। हमें समाज में आगे आने के लिए प्राचीन संस्कृति का अनुसरण करना होगा। भारतीय संस्कृति विश्व में सर्वश्रेष्ठ है और सर्वश्रेष्ठ रहेगी। यदि महिलाएँ आत्मनिर्भर होंगी तभी समाज का सर्वांगीण विकास हो सकेगा।

**B-54, सूरजकुण्ड कालोनी**
**गोरखनाथ–273015, गोरखपुर**
**मो. 09839058288**

☞ *पृष्ठ 08 का शेष*

## अपाला आत्रेयी

अगले मंत्र में कहा गया है कि ओषधियों को रस का सेवन करके दुर्बल और रोगिणी कन्याएँ भी शक्ति सम्पन्न होकर पति को चाहने लगी हैं।

अगले मंत्र में शरीर को तीन गुहाओं में विभक्त किया गया है।

**इमानि त्रीणि विष्टता तीनीन्द्र वि रोहय ।**
**शिरस्ततस्योर्वरामादिदं म उपोदरम् ।।**

ऋ. 8.91.5.

पदार्थ – हे (इन्द्र) शक्ति एवं ऐश्वर्य के इच्छुक मेरे जीवात्मन् (इमानि, त्रीणि) ये तीन (विष्टपा) अपने व्याप्त होने वाले को बचा रखने वाले बर्तन या पात्र हैं। शरीर की तीन गुहाएँ है– शिर गुहा, उरो गुहा और उदर गुहा। (तानि) इन तीनों को (वि रोहय) स्वस्थ करके बुद्धिशील, और उन्नतिशील कर। इनमें से (ततस्य) इस सन्तति रूप से निरन्तर चलने वाले (तन् वत) शरीर का (शिरः) शिरो भाग (दूसरी गुहा) (उर्वराम्) उरो गुहा है (तथा तीसरी गुहा) (इंद मे उपोदर) मेरे शरीर के मध्य भाग में स्थित उदर गुहा है। अब अन्तिम ऋचा देकर विषय को विराम देते हैं।

**ते स्थस्य खेऽनसः खे युगस्य शतक्रतो ।**
**अपालामिन्द्र त्रिष्पूत्वयकृणोः सूर्यत्वचम्**

।। ऋ. 8.91.7.

भावार्थ– इस ऋचा में 'अपाला' शब्द आ पड़ा है। अपाला का अर्थ है पालन–पोषण से रहित कन्या/ऋच में कहा गया है कि सोमलता आदि ओषधियों के रस का विधिवत् प्रयोग करने से शरीर के सभी प्रकार के दोष मिट जाते हैं। पोषण के अभाव में रिक्त एवं खोखला हुआ शरीर पुनः कान्तिमान् हो जाता है।

इतिशम्।

**73, शास्त्री नगर दादाबाड़ी**
**कोटा (राजस्थान) 324009**

# पत्र/कविता

## बलात्कारों से कैसे निपटा जाए

बलात्कार की राक्षसी घटनाओं से जम्मू–कश्मीर और उत्तरप्रदेश में हंगामा इसलिए खड़ा हो गया है कि इन घटनाओं से कुछ नेताओं का संबंध जुड़ा हुआ है लेकिन पिछले एक सप्ताह में बलात्कार की लगभग आधा दर्जन नृशंस घटनाएं देश के अन्य भागों में हो गई हैं। ये घटनाएं कठुआ और उन्नाव से भी भयंकर हैं। पहले बलात्कार और फिर हत्या ! ये घटनाएं क्या बताती हैं ? पहली बात तो यह कि देश में बलात्कार की घटनाएं आम हो गई हैं। बलात्कार पहले भी होते थे लेकिन इन दिनों भारत का हाल वही हो गया है, जो पश्चिमी देशों का है। क्या हमारी सरकार, संसद और अदालतों ने यह सोचने का कष्ट किया कि भारत में बलात्कार इतना क्यों बढ़ रहा है? क्या इसके लिए इंटरनेट, फिल्में, अर्धनग्न विज्ञापन, अश्लील साहित्य और संस्कारहीन शिक्षा–व्यवस्था जिम्मेदार है? यदि हां तो इस मामले में सरकार और समाज कितना जागरूक है? दूसरी बात यह कि बलात्कार की इन घटनाओं को क्या सिर्फ अदालती कार्रवाई से रोका जा सकता है? नहीं। अदालत के मुकदमों की हवा निकालने के दर्जनों तरीके लोगों ने निकाल रखे हैं।

कल की एक खबर थी कि एक बलात्कृत बच्ची के माता–पिता को 20 लाख रु. की रिश्वत दी गई थी कि वे अपनी बेटी के बयान बदलवा दें। नेता, अफसर और मालदार लोग खुद को बचाने और अदालतों को धोखा देने के लिए साम, दाम, दंड, भेद को पूरा प्रयोग करते हैं। ज्यादातर उन्हीं लोगों को सजा होती है, जो साधनहीन होते है? इससे समाज पर क्या असर पड़ता है? भावी बलात्कारियों को क्या कोई सबक मिलता है? सालों तक मुकदमे चलते रहते हैं। चुपचाप सजा हो जाती है। उसका चर्चा तक नहीं होता। बलात्कारियों को सजा–ए–मौत जेल की बंद कोठरी में न दी जाए। सजा दी जाए लाल किले पर, विजय चौक पर या कनाट प्लेस– जैसी जगह पर। उसका टीवी चैनलों पर जीवंत प्रसारण भी किया जाए। फिर देखिए बलात्कारों में कमी आती है या नहीं!

**डॉ. वेदप्रताप वैदिक**

**********

## हँस हँस के हंसराज ने जीवन लुटा दिया

अनमोल रत्न जाति का सरदार हंसराज,
करने को आया देश का उद्धार हंसराज।
शिक्षित समाज करने की ऐसी लगन लगी,
कालेज स्कूल खोले तो रहने न दी कमी।
शिक्षा का ढंग धर्म के सांचे में ढल गया,
बिगड़े हुये समाज का ढांचा बदल गया।
निष्काम सेवा भावना ने कर दिया कमाल,
शर्मिंदा होके रह गई अधर्मियों की चाल।
वैदिक विचारधारा को फिर ऐसा बल मिला,
ग़ैरत को होश आ गई जीवन–कमल खिला।
आदर्शवीर पुरुष में कुछ ऐसा जोश था,
जीवन में अपना धर्म निभाने का होश था।
उज्ज्वल त्याग की कमाई हुई सफल,
भगवान ने दिया कड़ी मेहनत का मीठा फल।
प्राणों से बढ़के प्यारा सचाई का धर्म था,
जीवन की श्रद्धा भक्ति में सत्य ज्ञान कर्म था।
ऐसा सफेद कपड़ों में संन्यासी रंग था,
अपने ही ढंग का अलग जीने का ढंग था।
हंस हंस के हंसराज ने जीवन लुटा दिया,
सोया पड़ा समाज था आकर जगा दिया।
पाखंडियों की कैद से आज़ाद कर दिया।
उजड़ा पड़ा वीरान घर आबाद कर दिया,
स्वामी दयानन्द ने ऐसा पढ़ाया पाठ,
तप त्याग से छुड़ा दिये जीवन के ठाठ बाठ।
ऐसे महान पुरुष की याद आये बार बार,
देता रहे श्रद्धाजंलि लाखों दिलों का प्यार।
जब तक रहेगी दुनिया अमर नाम रहेगा,
आदर्श रूप प्यारा सच्चा काम रहेगा।

**वेद प्रकाश शर्मा धारीवाल**
**103 अंकुर–बी, वशी फलिया, हालर**
**वलसाड – 396001 (गुजरात)**

## कहीं 30 वर्ष पहले वाली भूल की पुनरावृत्ति न हो जाय

जम्मू–कश्मीर के कठुआ जिले के रसाना गाँव के एक मंदिर में 17 जनवरी को एक नाबालिग 8 वर्षीय बालिका के शव को पाया गया था। प्रशासन ने कुछ लोगों को बंदी बनाया। इस गांव के अतिरिक्त इस जिले की जनता इस प्रकार के विवाद के कारण आक्रोशित व पीड़ित हो रही है। यह भी पता चला है कि इस गांव के कुछ परिवार भयभीत होकर वहां से पलायन करने को विवश हो गये हैं। कठुआ के लोगों ने इस हत्याकांड की निष्पक्षता व सत्यता के लिये देश की सर्वोच्च जांच एजेंसी सीबीआई से जांच करवाने की राज्य सरकार से मांग की है।

ऐसा लगता है कि वहां पर म्यांमार से अवैध रूप से घुसपैठ करके आने वाले रोहिंग्या मुसलमानों का विरोध न हो इसलिए एक साजिश रची जा रही है।

जम्मू का क्षेत्र हिन्दू बहुल है इसलिये षडयंत्रकारियों द्वारा यहां पर बांग्लादेशी घुसपैठियों को बसाने के अतिरिक्त पिछले लगभग 6–7 वर्षों से धीरे–धीरे रोहिंग्या मुसलमानों को भी बसाया जा रहा है। यह जम्मू क्षेत्र की जनसंख्या के स्वरूप को परिवर्तित किये जाने की सुनियोजित योजना लगती है। इन घुसपैठियों के कारण इस क्षेत्र में अनेक प्रकार के आपराधिक व आतंकी घटनाओं में वृद्धि हो रही है। उसी कारण जम्मू व कठुआ से रोहिंग्याओं को उस क्षेत्र से बाहर निकालने के लिये शासन पर दबाव बनाया जा रहा है। लेकिन राज्य सरकार कोई सुनवायी नहीं कर रही है। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि इस क्षेत्र की जनता को पीड़ित करके रोहिंग्याओं को वहां सरलता से बसाने की योजना पर वहां का प्रशासन कार्य कर रहा है।

समस्त देशवासियों को जम्मू क्षेत्र की जनता के पक्ष को समझना होगा और कठुआ कांड की सीबीआई जांच की मांग के लिये देशव्यापी आंदोलन करने होंगे। आज सम्पूर्ण देशवासियों को अपनी लगभग 30 वर्ष पूर्व की गयी भयंकर भूल जिसमें 5 लाख कश्मीरी हिन्दू कश्मीर से मार–मार कर खदेड़े गये थे, की पुनरावृत्ति से बचना होगा। स्मरण रहे कि कुछ वर्ष पूर्व जब हमारी अमरनाथ जी की धार्मिक यात्रा पर संकट आ रहा था तब भी जम्मू के लोगों द्वारा चलाये गये आन्दोलन को देश के अनेक भागों से भरपूर समर्थन मिला था और उस अभियान में सफल हुए थे। अब भी सबको इस आंदोलन में सहभागी बनना होगा। जम्मू–कश्मीर एक सीमांत प्रदेश है अतः राष्ट्रीय एकता व अखंडता के लिये यह हम सब का कर्तव्य और दायित्व भी बनता है कि ऐसे षड्यंत्रकारियों का एकजुट होकर प्रभावशाली प्रतिरोध करें। धन्यवाद

**विनोद कुमार सर्वोदय, गाजियाबाद**
**guptavinod038@gmail.com**

**********

# आर्य समाज मन्दिर पटियाला में हुआ ऋग्वेद पारायण यज्ञ

आर्य समाज मंदिर पटियाला में सात दिवसीय ऋग्वेद परायण महायज्ञ का आयोजन किया गया। समापन समारोह में मुख्य अतिथि श्री विनोद भरद्वाज–मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने अपने संबोधन में महर्षि दयानंद और आर्य समाज सुधार भारत की आजादी में दिए महत्वपूर्ण योगदान को याद किया और कहा कि वेद मार्ग पर चलते हुए आर्य समाज द्वारा देश की आजादी और समाज सुधार के लिए किए कई आंदोलनों की याद दिलायी। उन्होंने आर्य समाज पटियाला की पूरी टीम के वेद प्रचार सहित सभी सामाजिक उन्नति के लिए किए कार्यों की प्रशंसा की।

कार्यक्रम का शुभारम्भ यज्ञ के साथ किया गया। आर्य समाज के पदाधिकारी एवं सदस्यों ने विश्व के कल्याण की मंगलकामनायें करते हुए यज्ञ अग्नि में आहुतियाँ प्रदान की।

इस सात दिवसीय ऋग्वेद परायण महायज्ञ में बतौर यज्ञ ब्रह्मा एवं प्रमुख प्रवक्ता आचार्य हरी शंकर अग्निहोत्री ने कहा कि संसार को समझने के लिए ज्ञान की आवश्यकता है और ज्ञान के रूप में सृष्टि के सबसे प्राचीन ग्रन्थ "वेद" है। इस बारे में गहन स्वाध्याय व अध्ययन न करने वालों को अनेक प्रकार की भ्रान्तियां हैं। यदि वह इसका अध्ययन करें तो उनकी सभी शंकाओं व भ्रान्तियों का निवारण हो सकता है। आर्य समाज के प्रधान राज कुमार सिंगला ने सभी का धन्यवाद किया।

इस कार्यक्रम में पधारे प्रसिद्ध भजनोंपदेशक दिनेश पथिक ने अपने प्रभु–भक्ति एवं देश–भक्ति के मधुर भजनों से श्रोताओं को मन्त्र मुग्ध कर दिया। सत्संग के समापन पर सातों दिन ऋषि लंगर वितरित किया।

# आर्य समाज खेड़ा अफ़गान का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज खेड़ा अफ़गान (सहारनपुर) के एक सौ बीसवें वार्षिकोत्सव एवं व्यक्ति विकास शिविर के अवसर पर अजमेर से पधारे आचार्य कर्मवीर ने जिज्ञासुओं की शकाओं का समाधान करते हुए अनेक विषय पर प्रकाश डाला। आचार्य जी ने धर्म के नाम पर आडम्बरों के विषय में तर्क पूर्ण ढंग से समझाया और कहा कि ईश्वर एक है वह सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अमर है। किसी भी पदार्थ को मानने से पूर्व जानना चाहिये यदि हम आडम्बर रहित जीवन व्यतीत करना चाहते हैं तो हमें विद्या पढ़कर वेद आदि शास्त्रों का नित्य स्वाध्याय करना चाहिये।

श्री रणवीर शास्त्री जी ने कहा कि वेद ईश्वरीय वाणी है ईश्वर पवित्रतम है उसके कार्य विचार, उसकी संपूर्ण व्यवस्था पवित्र है। पवित्र वस्तु से ही पवित्र की रचना होती है। वेदों में मानव की संपूर्ण आवश्यकताओं के अनुसार जीवन जीने की कलाओं का सविस्तार वर्णन है। वेद कहते हैं **'भ्राता भ्रातरम मा द्विक्षत'** अर्थात् भाई–भाई से द्वेष न करे परिवार के सभी व्यक्ति आपस में एक दूसरे से प्रेम करे। शास्त्री जी ने सुख, दुःख शब्द की विवेचना की।

बागपत से पधारे श्री वेदपाल आर्य भजनोपदेशक ने ईश्वर भक्ति और देशभक्ति के सारगर्भित गीत सुनाये। कार्यक्रम का संचालन वेदभूषण, अमित कुमार ने किया। अन्त में आर्य समाज के आदित्य प्रकाश ने सभी महानुभावों का हार्दिक धन्यवाद किया।

दोनों दिन यज्ञ में अनेक जोड़ों (पति–पत्नि) ने भाग लिया। कार्यक्रम क्षेत्र के लोगों के साथ हरियाणा एवं उत्तरांचल के लोगों ने भी बड़ी संख्या में भाग लिया। वैदिक स. उत्थान न्यास द्वारा सभी वैदिक साहित्य आधे मूल्य पर दिया गया है।

# बी.डी.डी.ए.वी. धर्मशाला में सत्रारम्भ पर हवन-यज्ञ

आर्य युवा समाज डी.ए.वी. *धर्मशाला* में नये सत्र के उपलक्ष्य में यज्ञ का आयोजन किया गया। विद्यालय के प्रधानाचार्य एस.एच. खान ने अपने सम्बोधन में कहा कि में शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य है **'सा विद्या या विमुक्तये'** अर्थात् विद्या वह है जो हमें सब प्रकार के दुःखों से विमुक्ति दिलवाए। इसलिए ऋग्वेद में कहा है– 'मनुर्भव' मनुष्य बनो। मानवीय गुणों प्रेम, दया, त्याग, सेवा, परस्पर सहयोग, उत्तम आचरण व शुभ गुणों द्वारा ही मनुष्य का निर्माण सम्भव है। प्राचार्य ने छात्रों से कहा आप यहाँ से अच्छे संस्कार ग्रहण करें और समाज के लिए अच्छे कार्य करें। उन्होंने सभी छात्रों और अध्यापकों को नए सत्र के लिए शुभकामनाएँ दी। तत्पश्चात् बच्चों ने वैदिक भजन प्रस्तुत किए। शांति के बाद यज्ञ–शेष वितरित किया गया।

# आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय आबूपर्वत में होगा 28वाँ वार्षिकोत्सव

परमपिता परमात्मा की असीम कृपा से, ऋषि–मुनि, माता–पिता, गुरुजनों के आशीर्वाद से तथा भवादृश स्वजनों की शुभेच्छा के फलस्वरूप अविद्या के नाश तथा विद्या की वृद्धि कर समस्त संसार के कल्याण की भावना से पूर्वजों की तपोभूमि आबूपर्वत पर गुरुकुल का निर्माण किया गया हैं। इसमें विगत सत्ताईस से वेद, उपनिषद, दर्शन, संस्कृत भाषा तथा व्याकरण शास्त्रादि का शिक्षण कार्य प्रवर्तित हो रहा है।

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय, आबूपर्वत का वार्षिकोत्सव दिनांक 26,27,28 मई 2018 को मनाया जा रहा है। इस त्रि–दिवसीय वार्षिकोत्सव में यज्ञ, भजन, वेदोपदेश तथा ब्रह्मचारियों द्वारा शास्त्रार्थ, व्याख्यान, व्यायामादि के प्रदर्शन– इत्यादि अनेक कार्यक्रम आयोजित होंगे है।

वार्षिकोत्सव के इस कार्यक्रम में अनेक संत–महात्मा तथा विद्वज्जन पधारेंगे। सम्मिलित होने की सूचना स्वामी धर्मानन्द जी को गुरुकुल के पते अथवा मो. 09414589510 दी जा सकती है।

Registration No. R.N.I. 39/57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11\6066\2018-20
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103 \2018-20
Posted at N.D.P.S.O. ON 02/03-05-2018

☞ पृष्ठ 01 का शेष

## महात्मा हंसराज दिवस...

एवं आर्य गर्ल्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल, लोहगढ, (अमृतसर) की मुख्य अध्यापिका श्रीमती सुनीता शर्मा को 'महात्मा हंसराज सम्मान' से सम्मानित किया गया। डी.ए. वी.पब्लिक स्कूल, सेक्टर–8, चंडीगढ़ की छात्रा भूमि सावंत, डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, नवी मुम्बई की छात्रा रहिता कासिराज एवं डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, लुधियाना की छात्रा गुनप्रीत कौर को बोर्ड की परीक्षाओं में क्रमशः 99.4, 98.4 एवं 98.4 प्रतिशत अंक प्राप्त करने के लिए पुरस्कृत किया गया।

खेल–कूद में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कार प्राप्त करने वाले 8 खिलाड़ी भी सम्मानित किये गए जिनमें हाल ही में सम्पन्न राष्ट्रमंडल खेलों में टेबल टेनिस में 4 पदक प्राप्त करने वाली मनिका बत्रा एवं निशानेबाजी में स्वर्ण पदक विजेता श्रेयसी सिंह भी शामिल है। ये दोनों क्रमशः हंसराज मॉडल स्कूल, दिल्ली एवं हंसराज कॉलेज, दिल्ली की भूतपूर्व छात्राएं हैं। विशेष योग्यता प्राप्त छात्रा मलिका हांडा भी इनमें शामिल है। जो डी.ए.वी. कॉलेज, जालंधर की छात्रा है।

महात्मा हंसराज के जीवन पर आधारित नृत्य–नाटिका 'परमानन्द' की प्रस्तुति 'समर्पण दिवस' का मुख्य आकर्षण थी। इस नृत्य नाटिका में लगभग 1400 विद्यार्थियों ने अपने नृत्य और अभिनय से उपस्थित जन समुदाय को मंत्र–मुग्ध कर दिया। इसका निर्देशन सुप्रसिद्ध कोरियोग्राफर श्री उदय साहा ने किया। नाटिका की पटकथा स्वामी नित्यानंद द्वारा लिखी गई।

'समर्पण दिवस' के अवसर पर डी.ए. वी. संस्थानों में शिक्षित पुराने विद्यार्थियों को भी सम्मानित किया गया। महात्मा चैतन्य मुनि ने उन्हें अपना आशीर्वाद देते हुए डी. ए.वी. द्वारा सामाजिक एवं शैक्षणिक क्षेत्रों में किये गए उल्लेखनीय कार्यों के लिए बधाई दी। परेड़ ग्राऊंड, सेक्टर–5, पंचकूला में आयोजित इस समारोह में देश भर से आए वैदिक विद्वानों, आर्य संन्यासियों, बुद्धिजीवियों, शिक्षाविदों एवं विद्यार्थियों ने भारी संख्या में भाग लिया।

## डी.ए.वी. सैक्टर 49 गुरुग्राम में हुआ 'स्मर्ट' का गठन

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, सैक्टर 49, गुरुग्राम ने स्कूल मेडिकल रिस्पांस टीम (एमएमईआरटी) 'स्मर्ट' नामक एक दल का गठन किया है जिसका उद्देश्य किसी भी आपातकालीन परिस्थिति में प्राथमिक चिकित्सा तथा आपातकालीन इलाज के लिए विद्यार्थियों को प्रशिक्षित करना है। इस कार्य को अधिक विस्तृत रूप देने के लिए स्कूल में 'मेदान्ता द मेडिसिटी' के सहयोग से एक संगोष्ठी एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें डीएवी सहित गुरुग्राम के कई अन्य विद्यालयों ने भाग लिया और प्रशिक्षण प्राप्त किया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में गुरुग्राम के डिप्टी सी.एम.ओ. डॉ. शशि उपस्थित थीं, जिन्होंने समाज हित करने वाले इस कार्य की पहल के लिए विद्यालय की सराहना करते हुए अपनी शुभकामनाएं दीं। डॉ. आत्माराम बंसल ने विद्यार्थियों को मिर्गी और दौरे पड़ने की स्थिति में किए जाने वाले बचाव कार्यों एवं बरती जाने वाली

सावधानियों के बारे में जानकारी दी। डॉ. देवेंदर रिछारिया ने प्राथमिक चिकित्सा की प्रक्रिया से विद्यार्थियों को अवगत कराया।

कार्यक्रम के अंतर्गत विद्यार्थियों को सी.पी.आर. और ए.ई.डी. की भी ट्रेनिंग दी गई। विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती चारु मैनी ने सभी विद्यार्थियों को समाज हित के लिए अग्रसर होकर 'स्मर्ट' के सक्रिय सदस्य बनने को कहा और इस जीवन कौशल द्वारा जीवन की रक्षा करने के लिए प्रोत्साहित किया। यह कार्यक्रम बहुत ही जानकारीपूर्ण था, जहाँ विद्यार्थियों ने सीखा कि आपातकालीन परिस्थितियों में वे किस प्रकार प्राथमिक चिकित्सा के द्वारा विकट स्थिति को संभालने में सहायक बन सकते हैं।

## आर्यसमाज काकड़वाड़ी, मुंबई में डॉ. चंद्रशेखर लोखंडे जी का हुआ सम्मान

लातूर (महाराष्ट्र) आर्यजगत् तथा हिन्दी, मराठी भाषा के प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. चन्द्रशेखर लोखंडे और पत्नी सौ. संध्या लोखंडे का आर्यसमाज काकड़वाडी (गिरगाँव) मुम्बई में सम्मान किया गया। कार्यक्रम में मेघालय के राज्यपाल श्री. गंगाप्रसाद जी उपस्थित थे। स्वतंत्रता से पहले से ही इस समाज में सुधारक एवं वैदिक विद्वानों को सम्मानित एवं पुरस्कृत किया जाता रहा है।

डॉ. चन्द्रशेखर लोखण्डे जी ने आर्य समाज और उसके माध्यम से अनेकों राष्ट्रीय एवं सामाजिक कार्य किये हैं। उन्होंने महाराष्ट्र, कर्नाटक, और आन्ध्र में लगभग 500 ग्रामों में वैदिक धर्म का प्रचार

प्रसार किया है। लेखन के द्वारा समाज का प्रबोधन करते हुए 21 पुस्तकें लिखी हैं। हैदराबाद आन्दोलन पर व्याख्यान देकर युवाओं को संस्कृति और स्वातन्त्र्य के प्रति जागरूक करने का महत्व पूर्ण कार्य कर रहे हैं। इन्हीं कार्यों की दृष्टि में रखते हुए उन्हें आर्य समाज मुंबई द्वारा "आर्य वैदिक विद्वद् सम्मान्" प्रदान कर गौरवान्वित किया गया।

कार्यक्रम में मुंबई आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री. मिठाईलालसिंह अध्यक्ष के रूप में विद्यमान थे। कार्यक्रम में आर्य समाज के प्रधान श्री. देशबन्धु शर्मा, मंत्री श्री. विजय गौतमजी, संयोजक श्री. देवदत्त शर्मा, पं. सोमदेव, डॉ. वागीशजी शास्त्री, श्री प्रभारक गुप्त तथा श्रीमती डॉ. अनीता शास्त्री आदि विद्वान पदाधिकारी उपस्थित थे।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**